ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जनवरी 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साह के साथ सम्पन्न

गुरुकुल विद्यापद्धति महत्वपूर्ण और इसकी आवश्यकता भी है- स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारि

सभा की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली केन्द्रीय सभा द्वारा की गई। मंच संचालन श्री सुरेन्द्र जी रैली, श्री विनय जी आर्य और श्री सतीश जी चड्डा महामन्त्री सभा द्वारा कुलतापूर्वक किया गया। समारोह के प्रमुख वक्ता डा. विनय विद्यालंकार जी प्रधान उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा, सुश्री मोनिका अरोड़ा जी, सलाहकार भारत सरकार, श्री गंगा प्रसाद जी माननीय राज्यपाल मेघालय, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय राज्य मन्त्री, डॉ. कृष्ण गोपाल जी, सहायक कार्यवाहक रा.स.सं. और अन्य वक्ताओं द्वारा सम्बोधन किया गया।

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

श्री गजेन्द्र जी दराल राधे कृष्ण एसोसिएट

50 जोड़ी ट्रेक सूट 50 जोड़ी चप्पल आश्रम के बच्चों के लिए

श्री गजेन्द्र जी दराल राधे कृष्ण एसोसिएट टीकरी कलां दिल्ली द्वारा 50 जोड़ी ट्रेक सूट, 50 जोड़ी चप्पल प्रदान किया एवम् आश्रम के बच्चों से बातचीत करते हुए श्री गजेन्द्र जी दराल।

प्रिय बन्धुओं! मास जनवरी में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी फरवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म–शुद्धि–पथ (मासिक)

पौष–माद्य सम्वत् 2074 जनवरी 2018

सृष्टि सं. 1972949118 दयानन्दाब्द 193

वर्ष–17) संस्थापक–स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक–01

(वर्ष 48 अंक 01)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला–झज्जर (हरियाणा) पिन–124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
द्रविणोदा अग्नि	6
राष्ट्रोन्नति कैसे हो?	7
हमारा बनानेवाला	8
फल की चिन्ता	9
मन की गति	10
महारानी द्रोपदी	11
पारिवारिक सौहार्द कैसे रहे?	13
सौ वर्ष तक कैसे पाएँ-आरोग्य!	17
आपकी सेहत का जाम है बादाम	18
प्रकृति से सीखे नम्रता का पाठ	19
कुरूतियों का कुचक्र तोड़न ही होगा	20
हंसो और हंसाओं	22
संविधान लागू होने की 68वीं वर्षगांठ-26 जनवरी 2018	23
प्राचीन भारत में शासन प्रणाली और राजनीति	24
पर्वों का पुंजः मकर संक्रान्ति	25
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस में आध्यात्मिक चेतना	27
असली सुख	28
प्रकृति का उल्लासः ऋतु वसंत	29
धर्म पर बलिदान होने वाले आर्यवीर हकीकत राय	31
असली सुख	28
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

प्रेरणादायक रहा अखेराम सरदारो देवी फर्रूखनगर आश्रम का सत्संग

बृहदयज्ञोपरान्त आदरणीय स्वामी धर्ममुनि जी की अध्यक्षता में रविवासरीय सत्संग 10.12.2017 बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ताओं में वानप्रस्थी विश्वमुनि, चान्दसिंह आर्य, सत्यपाल वत्स आर्य, सुनील आर्य, प्रवीण जी, योग प्रचारक, एडवोकेट जयनारायण जी रहे। सत्संग के मध्य भजनों का कार्यक्रम भी बड़ा उत्तम रहा। ब्र. ध्रुव शास्त्री, राध श्याम, रामदेव ने अपने मधुर भजनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। आश्रम के संचालक व प्रबन्धक स्वामी सच्चीदानन्द जी ने नवयुवकों को सकारात्मक सोच की उन्नति करने के लिए प्रेरित किया। श्री विद्यानन्द जी व दीपक जी प्राकृतिक चिकित्सक ने भी योग सम्बन्धी चर्चा सत्संग में रखी। स्वामी योगानन्द जी सरस्वती ऋषिकेश से सत्संग में पधारे। सत्संग के अन्त में दोनों आश्रमों के मुख्यअधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया और दूर-दूर से आए हुये सभी आर्यो का सत्संग में पहुंचने पर धन्यवाद किया। आश्रम की तरफ से विक्रम देव शास्त्री ,कर्ण आर्य व सुखपाल जी द्वारा मधुर ऋषि लंगर कि व्यवस्था भी की गई थी जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। मंच का संचालन राजवीर आर्य ने कुशलतापूर्वक किया।

शान्तिपाठ व वैदिक नारों की गुंज के साथ सत्संग सम्पन्न हुआ।

आत्मा की शुद्धि कैसे हो?

कन्हैया लाल आर्य

एक राजा ने किसी महात्मा की बहुत ख्याति सुनी। एक बार अवसर निकाल कर उनसे मिलने वह उसकी कुटिया पहुँच गयें महात्मा को सादर नमन करने के पश्चात उनके सम्मुख बैठ गया।

तब महात्मा ने पूछा, ''कहो राजन्। कैसे आना हुआ? राजा ने बताया ''महाराज! जितने भी विद्वान् मेरे पास आते हैं वे सब आत्मा को जानने और उसे शुद्ध करने की बात बताते हैं। परन्तु मैं नहीं जानता कि इस आत्मा को शुद्ध कैसे किया जाये?''

महात्मा राजा को आत्मा की महत्ता, उसे शुद्ध करने के उपाय समझाने लगे परन्तु राजा उनकी बात सुनने के स्थान पर अपने राज्य की विशेषताएं धन-सम्पदा आदि की चर्चा करता जाये। राजा के इन बातों को सुनकर महात्मा सोचने लगे कि यह व्यक्ति अपनी जिज्ञासा शान्त करने आया है या मुझे अपने राज्य का रोब दिखाने आया है।

राजा को उन आत्मा प्रशंसा की बातों को सुनकर महात्मा ने पूछा, ''राजन! यदि तुम कहीं रेगिस्तान में फँस जाओ, दूर-दूर तक कहीं पानी का चिन्ह न दिखाई दे और प्यास से तुम्हारे प्राण निकलने लगें तो उस समय पानी के एक लोटे के बदले तुम से आधा राज्य मांगे तो दोगे या नहीं? राजा ने कहा, ''प्राण से अधिक मूल्यवान, क्या वस्तु है? अश्वय ही आधा राज्य दे दूंगा। फिर महात्मा ने पूछा, ''यदि तुम इतने बीमार पड़ जाओ कि जीने की कोई आशा ही न रहे, तब कोई वैद्य इस शर्त के साथ तुम्हारा उपचार करे और अच्छा करने का मूल्य आधा राज्य तुम से मांग ले तो तुम क्या करोगे?'' राजा ने फिर वही उत्तर दिया, ''भगवन्। प्राण से अधिक मूल्यवान क्या वस्तु है? जी है तो जहान है। मैं उस परिस्थिति में आधा राज्य अवश्य दे दूंगा।''

महात्मा राजा का उत्तर सुनकर खिल खिलाकर हँस पड़े फिर कहा, ''राजन्! थोड़ा विचार करें कि अपने प्राण बचाने के लिए तुम एक लोटा पानी और एक शीशी औषधि के लिए आधा राज्य देने को तत्पर हो परन्तु आत्मा के महत्व एवं उसकी शुद्धि के ज्ञान के स्थान पर अपनी भौतिक सम्पत्ति के गुणगान करने में व्यस्त हो। उनका महत्व अधिक है या प्राणों का। राजन्। जिस जीवन की रक्षा के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा काम कर सकता है, उस जीवन के उत्कर्ष के लिए राज्यपाट से बड़ी वस्तु का त्याग करने को उद्यत होना चाहिए। इसी से आत्मा शुद्ध हो सकती है।

– कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साह के साथ सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 91वां श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न हुआ हजारों की संख्या में पधार कर श्रद्धांजलि दी गई। 25 दिसम्बर 2017 प्रात: 9 बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन में आचार्य सत्यदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ वेदमन्त्रों के उच्चारण एवं वैदिक जय घोष के साथ हुआ। जिसका नेतृत्व स्वामी धर्ममुनि जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ द्वारा रथ पर बैठ कर किया गया। शोभा यात्रा बलिदान भवन से लौहारी गेट से चलकर खारी बाबली, चांदनी चौक, टाऊन हाल, नई सड़क एवं अजमेरी गेट होती हुई लगभग 3 किलोमीटर का सफर तय कर 12.50 बजे रामलीला मैदान में पहुंच गई। सभा की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली केन्द्रीय सभा द्वारा की गई। मंच संचालन श्री सुरेन्द्र जी रैली, श्री विनय जी आर्य और श्री सतीश जी चड्डा महामन्त्री सभा द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। मंच की शोभा आर्य जगत के विद्वतगण एवं संन्यासी महानुभाव बढ़ा रहे थे। समारोह के प्रमुख वक्ता डा. विनय विद्यालंकार जी प्रधान उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा। सुश्री मोनिका अरोड़ा जी, सलाहकार भारत सरकार, श्री गंगा प्रसाद जी माननीय राज्यपाल मेघालय, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय राज्य मन्त्री, डॉ. कृष्ण गोपाल जी, सहायक कार्यवाहक रा.स.सं. और अन्य वक्ताओं द्वारा सम्बोधन किया गया। स्वामी धर्ममुनि जी ने अपने आशीष वचनों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के किये कार्यों पर प्रकाश डालते हुए जोर देकर कहा कि आज भी गुरुकुल विद्यापद्धति का महत्वपूर्ण है और इसकी आवश्यकता भी है।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

जहांगीर पुर में यज्ञ सत्संग

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर द्वारा यज्ञ सत्संग का आयोजन किया गया। यज्ञोपरान्त प्रभावशाली छात्राओं को सत्यार्थप्रकाश देकर सम्मानित किया गया तथा जरूरत मंद बेटियों को गर्म कम्बल प्रदान किए गए।

पं. रमेश चन्द्र वैदिक सम्मानित

पं. रमेश चन्द्र वैदिक, अध्यक्ष वैदिक सत्संग मण्डल समिति रजि. झज्जर को उनके अन्य पदाधिकारियों/सदस्यों को स्वामी श्रद्धानन्द व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति के अवसर पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में पं. जयभगवान आर्य मन्त्री, ब्रह्मचारी सुभाष आर्य मन्त्री व श्रीमति सीता देवी सदस्य को स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी रामवेश जी द्वारा सम्मानित किया गया।

स्वदेशी का सम्मान

एक मिशन स्कूल में अपनी-आरंभिक शिक्षा पूर्ण कर के बालक सुभाष ने एक भारतीय विद्यालय में प्रवेश लिया। श्री वेणी माधव दास विद्यालय के प्रधानाचार्य थे, जो सदा धोती कुर्ता पहन कर विद्यालय में आते थे। उनकी इस देशी वेष-भूषा का, सुभाष के बाल मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने सोचा कि यदि प्रधानाचार्य महोदय विद्यालय में धोती कुर्त्ता पहन कर आते हैं, तो क्या विद्यार्थियों को भी धोती कुर्ता नहीं पहनना चाहिए। फिर सुभाष ने घर के कक्ष में टंगे स्वामी विवेकानन्द के चित्र को देखा जिसमें वह स्वदेशी वस्त्र धारण किए हुए थे। फिर तो बाल सुभाष के मन में भारतीय वेश भूषा की भावनाएं दृढ़ होती गई और अगले दिन से सुभाष धोती कुर्ता धारण करने लगे। पिताजी ने टोंका भी तो पुत्र ने दृढ़तापूर्वक कहा-दादा, यह तो हमारा राष्ट्रीय परिधान है। पुत्र का यह स्वाभिमानपूर्ण उत्तर सुन कर पिता मन ही मन प्रसन्न हो गए।

-सत्यवीर सिंह

द्रविणोदा अग्नि

– डॉ. रामनाथ वेदालंकार

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां,
यज्ञस्य केतुर, मन्मसाधनो वेः।
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं,
देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्॥

ऋग् 1.96.6

ऋषिः**कुत्सःआङ्गिरसः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

(परमात्मा-रूप अग्नि) (**रायः**) ऐश्वर्य का (**बुध्नः**) मूल, (**वसूनां**) वसुओं का (**संगमनः**) संगमकर्ता, (**यज्ञस्य**) यज्ञ का (**केतुः**) प्रज्ञापक (और) (**वेः**) कर्मशील जीवात्मा के (**मन्मसाधनः**) विचरित कार्यों को सिद्ध करनेवाला है। (**अमृतत्वं**) मोक्ष-रूप अमरत्व की (**रक्षमाणासः**) रक्षा करते हुए (**देवाः**) विद्वान् लोग (**एनं**) इस (**द्रविणोदां**) धन और बल के दाता (**अग्निं**) परमात्मा को (**धारयन्**) धारण करते हैं।

आओ, हम 'द्रविणोदा अग्नि' को हृदय में धारण करें। तुम पूछोगे, यह द्रविणोदा अग्नि कौन है? द्रविण धन और बल का नाम है, उसका दाता परमेश्वर ही द्रविणोदा अग्नि कहलाता है। वह परम प्रभु निर्धनों को आत्मिक और भौतिक धन देता है, निर्बलों को आत्मिक और शारीरिक बल प्रदान करता है।

वह सर्वविध सम्पत्ति का मूल है। ये जो विविध सत्य, अहिंसा, वशित्व आदि आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ हैं और जो हीरे-मोती, सोना-चाँदी आदि सांसारिक सम्पत्तियाँ हैं, इन सबका मूल स्रोत वही है। वह वसुओं का संगमकर्ता है। ऋषियों ने आठ वसु बताये हैं-अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, द्युलोक, चन्द्रमा और नक्षत्र। इनमें पारस्परिक संगति लानेवाला वही है, अन्यथा ये एक-दूसरे के विरोधी होकर आपस में ही टकराकर चूर-चूर हो जाते। वह 'यज्ञ का केतु' है, यज्ञ की ध्वजा बनकर लहरा रहा हैं यज्ञ का प्रज्ञापक है। उसका अपना कोई भी कार्य यज्ञदीन नहीं है। अतएव हम सबको यज्ञ का उपदेश कर रहा है। वह 'मन्म-साधन' है, कर्मशील जीवात्मा के विचारित कार्यों को सिद्ध करनेवाला है। जीवात्मा यदि उसे साक्षी रूप में अपने सम्मुख रखकर किन्हीं सत्कार्यों को करने का संकल्प करता है, तो वह उसके उस संकल्प को पूर्ण कराने में प्रबल सहायक बनता है। अतएव जो देव हैं, दिव्यता के पुजारी हैं, ज्ञान और चरित्र से विद्वान् हैं, वे अपने जीवनकाल में ही इस द्रविणोदा अग्नि की कृपा से अमृतत्व प्राप्त कर जीवन्मुक्त हो जाते हैं और निधि के समान उस अमृतत्व की निरन्तर रक्षा करते हुए धन एवं बल के प्रदाता इस द्रविणोदा अग्नि को स्थायी रूप से धारण कर लेते हैं, अपनी अन्तरात्मा का अनिवार्य अंग बना लेते हैं।

– **वेद मञ्जरी**

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय राष्ट्रोन्नति कैसे हो?

26 जनवरी! फिर आ गया गणतन्त्र दिवस।

देशवासियों! आओ मिल बैठकर विचार करें कि राष्ट्र किस प्रकार उन्नति कर सकता है।

हमारा अपना दृष्टिकोण है। जिस राष्ट्र के नायक शोषक नहीं सर्वपोषक होंगे, दुराचारी नहीं सदाचारी होंगे, विलासी तथा भोगी नहीं संयमी होंगे और स्वार्थी नहीं परोपकारी होंगे, वह राष्ट्र सदेव उन्नति को प्राप्त होगा। वहां सुख और शांति की वृष्टि होगी।

किन्तु क्या ऐसा हमारे यहां है? समाचार पत्र आप भी पढ़ते होंगे। क्या पढ़ते हैं? भ्रष्टाचार, घोटाले, हिंसा तथा हर प्रकार के शोषण के किस्से। फिर कैसे राष्ट्र उन्नति करेगा? कहां से बरसेगी सुख और शांति?

फिर जगह-जगह राष्ट्र बँटा हुआ दीख रहा है। दलों में दल हैं दो प्रकार के-साम्प्रदायिक और राजनीतिक। आगे यह दल क्षेत्रीय, भाषायी और जातिगत आधार पर बँटे हुए हैं। परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक्ता, विघटन और असहिष्णुता का खुल कर प्रचार हो रहा है। ऐसी दुष्ट प्रवृत्तियों का दण्ड हम पहले ही भुगत चुके हैं। देश के बँटवारे के रूप में। साम्प्रदायिकता अथवा राजनीतिक सोच के अनुसार मानव जाति का विभाजन नहीं किया जाना चाहिए। मनुष्य केवल मनुष्य रहे और सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण को लक्ष्य बनाकर पुरुषार्थ होना चाहिए।

क्या हो रहा है कि ये साम्प्रदायिक दल सांस्कृतिक संस्थाओं का चोला धारण कर रहे हैं। किन्तु उनके मूल में साम्प्रदायिकता छिपी रहती है जो अक्सर समय पाकर प्रकट हो जाती है। इसी प्रकार राजनीतिक दल और उनके कुटिल नेता सेवा और लोक-कल्याण की आढ़ में अपने-अपने दलों को सुदृढ़ और संगठित कर रहे हैं। लोक-कल्याण और तदनुरूप किये जाने वाले पुरुषार्थ के दृष्टिगत, शाश्वत और सार्वभौमिक आधार पर कैसे मानव जाति को कैसे विभाजित किया जाये इसका उल्लेख वेद में है:-

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरूणो मित्रो अर्यमा
मू चिन्स दम्यते जनः॥

मन्त्र में वरूण, मित्र, अर्यमा, प्रचेत सः ये चार वर्ग बताए गए हैं जिनमें मानवजाति को कर्म के आधार पर बांटा जा सकता है। आगे चलकर मनु जी ने इन चार वर्गो की पुष्टि चार वर्णों के रूप में की है।

वरूण वे लोग हैं, जिनके हाथ में दण्ड देने का अधिकार है। शासक, सेना तथा पुलिस वरूण की कोटि में आते हैं। मित्र वे हैं जो आम लोगों के मध्य कार्य करते हैं। व्यापारी, उद्योगपति तथा कृषक ये सभी मित्र हैं। मनु जी ने इन्हें वैश्य बताया है। सबकी सेवा करने वालों को अर्यमा कहा जाता है। मनु जी ने इन्हें शूद्र का नाम दिया है। डॉक्टर, इंजीनियर तथा वकील आदि से युक्त बुद्धिजीवी वर्ग को वेद में प्रचेतस कहा है। मनु जी ने इसको ब्राह्मण वर्ग कहा है।

इन चारों वर्गो को सरल भाषा में शिक्षक, रक्षक, पोषक और सेवक वर्ग कहा जा सकता है।

कर्म के आधार पर विभक्त ये चारों वर्ग अथवा वर्ण पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से यदि अपने कर्तव्यों का पालन करें तो कोई कारण नहीं कि राष्ट्र उन्नति न करे। साम्प्रदायिकता और जातिवाद से संबंधित सभी भेदभावों को मिटाकर तथा संगठित होकर राष्ट्रहित में नव-संकल्प लेना होगा आज के दिन। एकता में बल है। शक्ति ही होनी चाहिए राष्ट्र के निर्माण में। महाभारत में धृतराष्ट्र को उपदेश देते हुए विदुर जी कहते हैं:-

धूमायन्ते व्येयतानि ज्वलन्ति सहितानि च।
धृतराष्ट्रोल्यकानीव ज्ञातयो भारतवर्षभ।

क्या अर्थ हुआ। लकड़ी अलग-अलग रहने से धुआं देती है किन्तु मिलकर रहने से जलती है अर्थात् प्रकाश देती हैं इसी प्रकार प्राणी पृथक-पृथक सुलगते हैं, एक साथ रहकर प्रदीप्त होते हैं। आओ सब मिलकर परोपकार की भावना से पुरुषार्थ करें।

- धर्ममुनि

-गतांक से आगे

हमारा बनानेवाला

-पण्डित गंगा प्रसाद उपाध्याय

'नेचर' क्या है? मात्र शब्द-जाल

जो लोग कहते हैं कि सृष्टि को कुदरत ने बनाया है वे तो शब्द-जाल में फँसे हुए हैं, क्योंकि कुदरत या नेचर बनाने वाला का नाम नहीं किन्तु चीज के बनाने का ही नाम है। यदि पूछा जाय कि 'रोटी किसने बनाई? और उत्तर दिया जाय कि 'रसोईये ने' तो यह ठीक उत्तर न होगा, क्योंकि 'रसोई' के अंतर्गत ही रोटी आ जाती है। इस प्रकार कुदरत या नेचर के अंतर्गत ही रोटी आ जाती है। इस प्रकार कुदरत या नेचर के अंतर्गत ही संसार की सब वस्तुएं आ जाती है। बहुत-से लोग किसी कार्य का कारण न बतलाकर उस कार्य का दूसरा नाम 'कारण' के स्थान में ले देते हैं-यही बड़ी भूल है। जैसे यदि किसी वैद्य से पूछा कि 'अमुक पुरुष की मृत्यु का क्या कारण हैं? तो वह कहता है, 'हृदय की गति रूक जाना 'और 'मृत्यु' दोनों पर्यायवाची (समानार्थक) हैं:, कारण और कार्य नहीं। 'मृत्यु ही हृदय की गति का रूकना है? और 'हृदय की गति रूकना ही मृत्यु है' तो इसका यह उत्तर कदापि न होगा कि उसे ज्वर है 'ज्वर' बीमारी का एक रूप है, कारण नहीं। इसी प्रकार कुदरत या नेचर ही सृष्टि है और सृष्टि ही कुदरत या नेचर है। बीज का पृथिवी में पड़कर खाद आदि की सहायता से उग आना ही सृष्टि है और यही कुदरत या नेचर है। नेचर इसके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं।

परमाणुओं के स्वभाव से सृजन नहीं- अब रहा स्वभाव का प्रश्न। यदि परमाणुओं में स्वयं मिलकर वस्तु बनाने का स्वभाव होता तो मनुष्य या अन्य प्राणियों को किसी चीज के बनाने की जरूरत न पड़ती। जो परमाणु अपने स्वभाव से ही वृक्ष बना सकते थे, उन्हीं परमाणुओं से उसी स्वभाव की प्रेरणा से मेज, संदूक और कुर्सी भी बन सकती थी। जिन परमाणुओं से स्वभाव द्वारा पहाड़ बनते हैं उससे मकान भी बनने चाहिए थे। क्योंकि यह तो मानना पड़ेगा कि जिन परमाणुओं से मेज बनी है वह उन परमाणुओं से मेज बनी है वह उन परमाणुओं के स्वभाव के विरूद्ध नहीं बनी। यदि मेज का बनना उन परमाणुओं के स्वभाव के विरूद्ध होता तो कोई बढ़ई भी वृक्ष से मेज न बना सकता। चूने को हल्दी में मिलाने से रोरी बनती है, परन्तु चूने का स्वभाव नहीं कि वह स्वयं आकर हल्दी से मिल सके। इसको परस्पर इकट्ठा करने की जरूरत होती है। संसार में देखा जाता है कि कभी पानी ऐसी वस्तुओं के संसर्ग में आ जाता है कि उसके दोनों भाग अर्थात् आक्सीजन और हाइड्रोजन अलग-अलग हो जाते हैं और कभी भिन्न-भिन्न पदार्थ आपस में मिल जाते हैं जिनका हाईड्रोजन और औक्सीजन मिलकर पानी बन जाता है। इन पदार्थों का परस्पर संसर्ग स्वयं नहीं होता। इसके लिए कोई निमित्त चाहिए। कभी इस निमित्त को हम देख सकते हैं जैसे प्रयोगशाला में प्रयोग करने वाला और कभी नहीं देख सकते। यदि प्रयोगशाला में रखी हुई वस्तुएँ स्वयं स्वभाव से नहीं मिल जाती हैं, न अलग हो जाती हैं तो सृष्टि के अन्य स्थानों में वे कैसे स्वयं मिल गई होंगी? फिर देखना चाहिए कि स्वभाव क्या है? यदि कहो कि परमाणुओं में रहने वाली उस अदृश्य शक्ति को स्वभाव कहते हैं जिनसे प्रेरित होकर परमाणु आपस में मिलते हैं तो ऐसी शक्ति के अस्तित्व की सिद्धि नहीं होती। क्योंकि जो परमाणु एक स्थान पर मिलते हैं वे दूसरे स्थान पर अलग भी होते हैं। यदि मिलना स्वभाव है तो वियोग नहीं होना चाहिए था। यदि वियोग होना स्वभावं होता तो मिलना नहीं चाहिए था। परमाणुओं में न तो परस्पर मिलने का स्वभाव है, न अलग होने का। उनमें ऐसे गुण तो अवश्य हैं कि यदि कोई उनको मिला दो तो एक विशेष वस्तु बन जाय, जैसे चूना और हल्दी ही के मिलने से रोरी बनती है, चूने में दही मिलाने से रोरी न बनेगी। परन्तु न तो चूना हल्दी में स्वयं मिलेगा न हल्दी चूने से। इसका मिलाने वाला कोई दूसरा ही होगा।

हम पहले कह चुके हैं कि संसार के सभी कार्यो में केवल दो भाग हो सकते हैं-एक वे जिनका बनानेवाला नास्तिकों और आस्तिकों दोनों ही स्वीकार है, जैसे मेज, कुर्सी, आदि, दूसरे वे जिनमें मतभेद है। इनके अतिरिक्त तीसरा कोई भाग ही नहीं। यहाँ तर्कशास्त्र के अनुसार पहले प्रकार के कार्य तो 'दृष्टान्त' कोटि में आ सकते हैं, दूसरे नहीं। क्योंकि यह नियम है कि-

-क्रमशः

फल की चिन्ता

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

चिंता मनुष्य को दीमक की तरह अंदर से खोखला कर देती है। चिंता बी.पी. शुगर जैसी बीमारियों को जन्म देकर मनुष्य को चिता की ओर धकेल देती है। चिंता और चिता में केवल एक बिन्दु का फासला है। लेकिन फिर भी मनुष्य सदैव अपने कर्म फलों की चिन्ता में दु:खी रहता है। हर व्यक्ति स्वतन्त्र कर्ता के रूप में किसी भी कार्य को करने ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतन्त्र होने के कारण अपने द्वारा संपादित हर कर्म को कर्ता, और कर्ता होने के कारण ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में उसके फल का भोक्ता होता है। हर मनुष्य अपने द्वारा किए गए दुष्कर्मों को भलीभाँति जानता है और यह भी मानता है कि उसके दुष्कर्मों का फल ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में दंड स्वरूप किसी विपत्ति कष्ट के रूप में अवश्य मिलेगा। हम सभी 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'' के सिद्धान्त से परिचित हैं। यह हमारे लिए संभावित फलों की चिन्ता का एक प्रमुख कारण है।

चिंता का दूसरा कारण उस फल की चिन्ता है जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं बिना पुरुषार्थ किए वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की चिंता हमें बहुत सताती है। चिंता करने से लक्ष्य की दूरी और अधिक बढ़ जाती है। कर्म करने से मनुष्य उतना नहीं थकता जितना उस कर्म को करने वा फल की प्राप्ति की चिंता से थक जाता है। सीधे सरल शब्दों में चिंता हमारे कार्य करने की ऊर्जा को क्षीण कर देती है और चिंता में परेशान बिना कार्य को प्रारम्भ किए ही हतोत्साहित होकर थक कर बैठ जाता है। अब प्रश्न उठते हैं-

(1) क्या बिना फल की कामना के कर्म संभव हैं? (2) क्या फल की चिंता करनी चाहिए? (3) फल की चिंता ना करें तो क्या करें?

योगेश्वर कृष्ण ने तो विवाद में फँसे अर्जुन को गीता का संदेश देते हुए निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्मों की श्रेणी में रखा। यह ठीक है कि फल की कामना मनुष्य को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है लेकिन बिना कर्म किए फल की कामना चिन्ता का मुख्य कारण बनती है। और ऐसे कर्म साधारणतया मनुष्य के स्वयं के स्वार्थ के वशीभूत होते हैं। वैसे भी **'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन'** कहकर योगेश्वर कृष्ण ने मनुष्य द्वारा कर्ता के रूप में कर्म करने पर तो अधिकार बताया है। परन्तु फल की प्राप्ति के लिए कर्म का कर्ता ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के ही अधीन है। अत: जब फल देना हमारे अधिकार क्षेत्र की बात नहीं है तो उस कर्म को ना करके अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर की चिन्ता किसी भी व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक कैसे ले जा सकती है। जैसे एक परीक्षार्थी के लिए परीक्षा की विषयवस्तु का ज्ञान लेना, पढ़ना और परीक्षा देना तो उसके अधिकार में आता है परन्तु परीक्षाफल तो परीक्षक के अधिकार की बात है। फल की व्यर्थ चिंता तो हमें उस बंदर की तरह बना देती है जो रोजाना आम की गुठली को खोद कर देखता है कि पेड़ बना या आम लगा या नहीं। इस प्रकार वह उसे अंकुरित भी नहीं होने देता। हमारे कर्म तो बीज की तरह हैं जिन्हें हम खेत में पुरुषार्थ का हल चलाकर बो देते हैं और फिर अपनी ओर से कर्म करते हुए खाद पानी दवा से तैयार करते हैं लेकिन हमारे कर्मों के फलों की फसल तो समय आने से तैयार होती है। यहाँ यह भी स्पष्ट है कि यदि हमने बबूल के बीच बोए हैं तो आम की फसल कभी नहीं होगी। अर्थात् जैसे कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान। फल की चिन्ता में हमारी हालत वैसी ही हो जाती है जैसे हम गाड़ी में साथ के सामान का बोझ नीचे रखकर उस पर बैठने के स्थान पर बोझों को सिर पर उठाकर बैठे हों। न्याय व्यवस्था में हमारे कर्मों का फल देना ईश्वर पर छोड़ देना ही उचित है। हमें तो केवल अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् अपने द्वारा संपादित होने वाले कर्मों का चिन्तन मनन करना चाहिए। क्योंकि यदि कर्मों की दिशा यानि चलने

का रास्ता उलटा होगा तो हम अपने लक्ष्य से दूर होते चले जाएँगे। वैसे भी स्वार्थ के वशीभूत किए गए कर्मों के फल की चिन्ता हमें उन कर्मों में लिप्त कर देती है और वह कर्म हमारे बंधन का कारण बनते हैं। जैसे यदि एक मधुमक्खी पराग चुनकर बनाए उस मधु का स्वाद लेने के लिए उसमें लिप्त हो जाए तो उसी शहद में फँस कर मर जाती है।

अब अन्त में प्रश्न आता है कि हम फल की चिन्ता ना करें तो क्यों इसका सीधा सरल उत्तर है कि हम मनुष्यों को अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् स्वतन्त्रकर्ता के रूप में केवल अपने कर्म के संपादन से पूर्व उसका चिन्तन मनन करना चाहिए और निष्काम भाव से यज्ञीय वा परोपकार के सर्वहितकारी कार्यों को करते हुए फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था रखते हुए उसकी चिंता उसी पर छोड़ देनी चाहिए।

-602 जी एच 53, सैक्टर-20, पंचकूला
मो. 94676086866, 9878748899

मन की गति

-ऋषि राम कुमार, 246/4, माडल टाऊन, गुड़गांव

मन की गति को मैं क्या जानूं,
मन पर कोई अधिकार नहीं है,
मन के उपर चले किसी की,
ऐसी कोई सरकार नहीं है।

मन तो बस मन ही होता है,
उसको कैसे समझाऊं मैं,
दिन रात सोच सोच कर हारा,
वो अति कहां से लाऊं मैं।

मन दिन रात भागता रहता, दूर दूर तक जाता है,
मन की अपनी महिमा न्यारी,
नहीं कुछ भी बतलाता है।

मन की गति बहुत तेज है, वक्त पीछे रह जाता है,
ढूढे ढूढे कब हारा हूं मैं,
कब आता कब जाता है।

नहीं मानता मेरी बात यह,
जीवन यूं ही निकल गया, तुम सोचकर कुछ बतलाओ,
ऋषि तो कह कर थक गया।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006
फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

<u>गतांक से आगे</u>

महारानी द्रोपदी

-श्री राजवीर जी आर्य, ट्रस्टी आत्मशुद्धि आश्रम

सहदेव ने कहा कि मैं गौ-सम्बन्धी सभी विद्यायें जानने के कारण तन्तपाल नामक गौसेवक बनकर राजा विराट के धन की वृद्धि करूंगा। फिर सभी द्रौपदी को लेकर चिन्तित हुए और सोचने लगे कि यह सुकुमारी पतिव्रता राजकुमारी जिसका यश चहुं ओर फैला हुआ है, यह किस प्रकार राजा विराट के यहाँ रहेगी। यहाँ भी महारानी द्रौपदी की बुद्धि का कमाल देखिए। द्रौपदी सभी पाण्डवों को शोक में डूबे हुए देखकर कहने लगी कि मैं सैरन्ध्री बनकर रानी सुदेष्णा के पास रहूंगी क्योंकि मैं केश कर्म (बालों का काढ़ना एवं बांधना) और श्रृंगार के कर्म में निपुण होने के कारण उसके यहाँ सुरक्षित रहूँगी, आप मेरी चिन्ता ना करें। इसके साथ द्रौपदी एक बात और कहती है कि मैं रानी सुदेष्णा से कहूँगी कि मैं राजा युद्धिष्ठिर के घर द्रौपदी की दासी होकर रहती थी। उसने यह नहीं कहा कि मैं पाँचों भाईयों के यहां द्रौपदी की दासी बनकर रहती थी, बल्कि कहां **युद्धिष्ठिर गेहे वै द्रौपद्याः** (मैं युद्धिष्ठिर के घर में द्रौपदी की दासी होकर रहती थी)। यहाँ भी स्पष्ट है कि द्रौपदी केवल युद्धिष्ठिर की ही पत्नी थीं। इसके आगे वे सभी यमुना तट से होते हुए मत्स्य देश पहुंचे। इससे पहले उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्र किसी सुरक्षित जगह पहुंचा दिये। योजना अनुसार पाचों भाई राजा विराट के यहां सेवा पा गये। द्रौपदी ने भी मलीन से वस्त्र पहनकर अपनी बुद्धि से रानी सुदेष्णा को इतना प्रभावित किया कि उसने कहा कि "तुम जैसी स्त्री दासी नहीं हो सकती, तुम तो साक्षात देवी, देवकन्या, अप्सरा व कोई नागकन्या लगती हो"। तुम सत्य बताओ कि तुम कौन हो? द्रौपदी ने महारानी सुदेष्णा को विश्वास में ले लिया और झूठे बर्तन साफ करना, पर पुरुष के दर्शन न करना व किसी के पैर धोने सम्बन्धी शर्ते भी मनवाने में सफल रही। और इस तरह से रानी से सत्कार पाती हुई वहाँ रहने लगी। साल पूरा ही होने वाला था कि राजा विराट के सेनापति जो सुदेष्णा का भाई भी लगता था, किसी तरह से उसकी दृष्टि द्रौपदी पर पड़ गई और वह आसक्त हो गया। उस संकट की घड़ी को बड़ी कुशलता व सूझबूझ तथा वीरता से सामना करके द्रौपदी ने कीचक को भीमसेन से मरवा दिया। कीचक एक नामी ग्रामी मल्ल था। उसके

मरने का समाचार चहूँ दिशाओं में चला गया। जिसके चलते कौरवों के भी कान खड़े हो गये कि कीचक को इतनी सरलता से तो भीम ही मार सकता है। दूसरी तरफ द्रौपदी पर घोर संकट आन पड़ा और वह यह कि रानी सुदेष्णा ने द्रौपदी को महल छोड़ने की आज्ञा प्रदान कर दी क्योंकि विराट को लगने लगा कि इस स्त्री के पीछे अवश्य कोई बड़ी शक्ति काम कर रही है, वह तेरे राज्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। अज्ञातवास को समाप्त होने में बस मात्र 13 दिन बचे थे। द्रौपदी ने प्रार्थना की कि मुझे तेरह दिन और रहने दीजिए। मेरे रहने से आपका और राजा का कल्याण ही होगा, कुछ अशुभ नहीं होगा। मत्स्य देश के राजा-रानी ने द्रौपदी को 13 दिन के रहने की आज्ञा प्रदान कर दी। दुर्योधन के समस्त गुप्तचर राजा विराट के यहाँ गुप्त रूप से पाण्डवों का भेद जानने के उद्देश्य से आये, लेकिन सब व्यर्थ। अन्त में त्रिगर्त का राजा सुशर्मा जिसका राजा विराट से वैर था, उसने पाण्डवों के वहां होने का सन्देह जताया और फिर सुशर्मा ने दुःशासन आदि की सहायता से राजा विराट पर आक्रमण करके उसकी एक लाख गायों को अपने आधीन करके गोपालकों को बन्धक बना लिया। घोर संग्राम प्रारम्भ हुआ। राजा विराट को भी पकड़ लिया गया। यहाँ पाण्डवों विशेष तौर पर अर्जुन और भीम द्वारा ऐसा पराक्रम दिखाया जैसा रामायण काल में राम, हनुमान और लक्ष्मण ने दिखाया था। कौरवों की तरफ से भीष्म पितामह, द्रौणाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, सुकर्मा तथा दुःशासन

सभी के सभी भाग खड़े हुए। राजा विराट को छुड़वा लिया गया। भेद खुलने पर राजा विराट ने बहुत क्षमा याचना की। पाण्डवों ने राजा विराट को यह कहते हुए क्षमा कर दिया कि हे राजन् आपने तो हम पर ही कृपा की है। जिससे सुखपूर्वक हमारा एक साल का अज्ञातवास निकल गया। इस अवसर पर राजा विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के साथ करना चाहा, लेकिन महाचरित्रवान अर्जुन राजा विराट से सम्बन्ध जोड़ने के उद्देश्य से अपने बेटे अभिमन्यु से विवाह करवा दिया। इस शुभ समाचार को जानकर योगेश्वर, सुभद्रा, राजा द्रुपद आदि पाण्डवों के हितैषी बन्धु मिलने के निमित आ पहुँचे। यहाँ भी राजा विराट स्वयं अपने मुख से यशस्विनी द्रौपदी शब्द प्रयोग करते हैं। रानी सुदेष्णा को सत्य मालूम होने पर तो बुरा हाल हो गया। वह सैकड़ों स्त्रियों को आगे करके उत्तम आभूषण व वस्त्रों से सत्कार करती है और अपनी अज्ञानता के लिए क्षमा चाहती है, तो यहाँ भी द्रौपदी का व्यवहार उत्तम पाया जाता है। अपनी विद्वता, नम्रता एवं शालीनता से रानी सुदेष्णा के अन्दर आये अपराध बोध को समाप्त कर दिया। द्रौपदी के गुणों के कारण ही रानी के हृदय में उसका एक विशेष स्थान बन गया। यही महान आत्माओं की पहचान होती है।

एक वर्ष के अज्ञातवास में जिस तरह से द्रौपदी रही है, वह कोई सामान्य बात नहीं है। राजा विराट की पत्नी सुदेष्णा कोई साधारण स्त्री नहीं थी। उसका जीवन चरित्र महाभारत में उत्तम पाया जाता है। राजा विराट के सेनापति से विवाह के लिए कहना रानी सुदेष्णा की एक विवशता थी क्योंकि राजा विराट एक सम्पन्न देश का राजा था और उससे कई अन्य राजा शत्रुता रखते थे। कीचक उस समय का बहुत बलशाली और युद्ध विद्या में निपुण व्यक्ति था। उसको नाराज करने का तात्पर्य था अपने राज्य को पराधीन करना। इसीलिए रानी सुदेष्णा ने महारानी द्रौपदी को कीचक से शादी के लिए कहना पड़ा। इस संकट को भी उस महारानी ने बड़ी सूझ-बूझ से टाल दिया लेकिन कीचक के मरने से भूचाल आ गया और स्त्रियों के स्वभावनुसार तरह-तरह की कहानियाँ घड़ी जाने लगी। स्वयं राज विराट भी डर गये। यह तो संयोग ही था कि दिन थोड़े रह गये थे नहीं तो क्या परिणाम होते यह अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। यद्यपि इन संवादों को हम प्रक्षिप्त मानते हैं लेकिन फिर भी एक श्लोक दे रहे हैं जिसमें द्रौपदी सत्यभामा को कह रही है (द्रौपदी सत्यभामा संवाद)

देवो मनुष्यो गन्धर्वो चापि स्वंकृतः।
द्रव्यवानभिरूपो वा न मेडन्यः पुरुषा मतः॥ (23)

(अर्थात् देवता, मनुष्य, गन्धर्व, युवा, अच्छी सजधज वाला, धनवान, अथवा परम सुन्दर कैसा ही पुरुष क्यों न हो, मेरा मन, भर्त्ता (युद्धिष्ठिर) को छोड़कर और कहीं नहीं जाता) अब आप ही सोचिए कि यहां द्रौपदी स्वयं एक भर्त्ता की बात कह रही है, ना कि भर्त्ताओं को इतिहास को प्रदूषित करने वाले कहाँ चूकते है। शुक्र है इन्होंने पाँच पतियों से ही काम चला लिया। उस आप्त पुरुष योगेश्वर कृष्ण का क्या हाल बनाया हुआ है, हृदय रो उठता है। 16000 रानियों का होना बताते हैं, यह तथाकथित विद्वान्। अब विचारिये जो व्यक्ति पैदा होने से मृत्युपर्यन्त एक दिन भी चैन से नहीं बैठा, धर्म की रक्षा करता रहा, अन्याय के विरूद्ध चीन की दीवार बना खड़ा रहा, उस सूर्य समान तेजस्वी महात्मा को लम्पट, कामी, नचैया, चोर, जार, स्त्री हत्यारा आदि कह-कहरकर न जाने क्या-क्या आरोप लगाये हैं। शिशुपाल तरह-तरह के झूठे आरोप लगाकर गालियाँ बक रहा था, लेकिन जैसे ही डरपोक, कायर, युद्ध से भागने के मिथ्या आरोप लगाये और फिर ललकारा तो उस शेर की दोनों भुजायें फड़क उठी और एक ही वार में शिशुपाल जो अपने आपको बड़ा योद्धा समझता था, उसका सिर कहीं जा पड़ा और धड़ी कहीं जा पड़ा। सभा में सन्नाटा छा गया। हमने ना राम, हनुमान, ऋषि मुनियों आदि किसी को भी नहीं बख्शा। इसीलिए विधर्मियों की तो बात ही छोड़िए। सरकारें भी हमारे इतिहास के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती। द्रौपदी जैसी विरांगना व चरित्रवान महारानी पर अगर हम यह दोषारोपण करते हैं तो क्या बड़ी बात है? - **क्रमशः**

पारिवारिक सौहार्द कैसे रहे?

- कृष्णचन्द्र टवाणी

समग्र विश्व विभिन्न राष्ट्रों में बंटा है, राष्ट्र की इकाई हैं शहर और ग्राम और इनकी अंतिम इकाई है परिवार। परिवार का अर्थ है-जहां माता-पिता, पुत्र-पुत्रियाँ, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची वगैरह एक साथ रहते हैं। एक का सुख सबका सुख और एक का दुख सबका दुःख होता है। सभी सदस्य केवल अपने ही लिये नहीं, परिवार के लिए जीते हैं। परिवार ही बालक के लिए सर्वप्रथम पाठशाला है जहां पर वह प्यार, प्रेम, सहयोग, स्नेह, संस्कार सभी का अनुभव करता है। एक अकेला व्यक्ति निरपेक्ष जीवन जीता है। किसी, भी परिवार के सदस्य जब मिलकर रहते हैं, उसका आधार होता है पारिवारिक सौहार्द। सौहार्द का अर्थ है स्नेह-संपूरित मैत्री भाव।

आज सौहार्द की नौका भौतिकवादी मूल्यहीन सभ्यता के सागर में डूब रही है। यह स्थिति चिंतनीय है, सोचनीय है इससे मानव जीवन की मुस्कान फीकी होती जा रही है, जीवन आज तनावग्रस्त और बोझिल होता जा रहा है। संयुक्त परिवार का जीवन हो चाहे एकल परिवार का, सुखमय जीवन का मूल बिन्दु तो वही सौहार्द है। जहां स्नेह नहीं, सहानुभूति नहीं, त्याग नहीं, सहनशीलता नहीं अर्थात् जिस परिवार में स्नेहिल मैत्रीभाव नहीं वहां प्रेम की, सुख शांति की सरिता नहीं बह सकती।

पूर्वकाल में पारिवारिक सौहार्द की समस्या इतनी जटिल नहीं थी। सौहार्द सहज था। क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या पर सहज संयम का अंकुश निष्पक्ष था एवं दृढ़ व्यक्तित्व वाले मुखिया के संचालन में परिवार सहज गति से चलता था। परिवार के सैकड़ों सदस्य भी एक साथ रहते थे और सुविधा तथा गौरव का अनुभव करते थे। परिवार में नीति निर्धारण, योजना, गृहस्थी का संचालन, विवाह, शिक्षा, रोजगार, सभी की व्यवस्था परिवार के बुजुर्गों पर होती थी। युवापीढ़ी निश्चित होकर काम करती थी। परिवार का संचालन उनकी समस्या नहीं थी। वृद्धजनों के स्नेह-संरक्षण में नई पौध विकास की गति पर सहजरूप से बढ़ती चलती थी। क्योंकि वे सब एक-दूसरे को अपनाना जानते थे, रिश्तों को हृदय से स्वीकारते थे। सहिष्णुता के अभाव में तो सौ क्या दो व्यक्ति भी साथ जीवन निर्वाह नहीं कर सकते।

एक बादशाह ने अपने वजीर के बारे में सुना कि उसके परिवार में लगभग सौ व्यक्ति एक चूल्हे पर भोजन करते हैं, साथ रहते हैं, सब सुखी हैं, परिवार में कोई विवाद नहीं, झगड़ा नहीं। बादशाह स्वयं उस परिवार की स्थिति का जायजा लेने वजीर के घर पहुंचे। वहाँ जो कुछ सुना था उससे भी अधिक व्यवस्था, अनुशासन, शांति और सबके चेहरों पर प्रसन्नता का भाव देखकर बादशाह को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा आप इतने लोग एक साथ रहते हैं क्या कभी आपस में झगड़ा नहीं होता? आप लोगों के मन में कोई ईर्ष्या, द्वेष, मनमुटाव तो नहीं है? क्या कोई कठिनाई नहीं आती? सब प्रश्नों का नकारात्मक उत्तर पाकर बादशाह ने पूछा-''आखिर इस पारिवारिक शांति और सुख का राज क्या है?'' परिवार के मुखिया ने गंभीर भाव से कहा-हम एक दूसरे को सहना जानते हैं। इसलिए स्नेहिल मैत्रीभाव से रहते हैं। पारस्परिक सौहार्द के लिए सहिष्णुता ही आधार तत्त्व है। सहिष्णुता अहिंसा की जननी है और अहिंसा का अर्थ है किसी को भी मन, वचन, कर्म, से कष्ट नहीं पहुँचाना।

आज सब ओर व्याप्त अशांति का मूल कारण ही असहिष्णुता है जो अलगाववाद को जन्म देती है और रिश्तों में रिसाव तथा सम्बन्धों में सिसक पैदा हो जाती है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति सहज मैत्री भाव नहीं रख पाता तभी तो विवाद पैदा हो जाते हैं और अशांति व्याप्त हो जाती है। भारत में परिवारों के टूटने का जो सिलसिला बना है वह चौंकाने वाला है। पश्चिमी देशों में बहुत पहले ही यह व्यवस्था भंग हो चुकी है वहां तो सहिष्णुता नाम मात्र भी नहीं होती है। छोटे-छोटे विवाद को लेकर ही न्यायालय पहुंच जाते हैं। आये

दिन तलाक होते रहते हैं। भारतीय पारिवारिक संस्कृति में यह परिवर्तन पश्चिम की देन है। जीवन को जीने का ढंग ही बदल गया है। लाइफ स्टाइल में आये परिवर्तन, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, औद्योगीकरण, मकान की समस्या इत्यादि कई कारण हैं जिनसें परिवारों में निकटता का भाव कम होता जा रहा है, बिखराव बढ़ रहा है और परिवार में सौहार्द की कमी आती जा रही है। भले ही व्यावसायिक कारणों से परिवार से दूर रह कर भी सौहार्द का सेतु जुड़ा रहे तो नई उभरने वाली समस्याओं को रोका जा सकता है और परिवार की सुखद एकता बनी रह सकती है।

परिवार छोटा हो या बड़ा, धनी हो या निर्धन, शिक्षित हो या अशिक्षित यदि स्नेह-संपूरित भाव अर्थात् सौहार्द न हो तो सुख शांति प्रेम का स्रोत सूख जाता है और परिवार का विघटन होकर ही रहता है। जो परिवार के झगड़ों के कारण अलग रहने का निर्णय लेते हैं, उन्हें स्थान बदलने की बजाय स्वभाव एवं दृष्टिकोण बदलने की बात सोचनी चाहिए।

एकल परिवार की अपनी समस्यायें हैं। पति के कार्यवश बाहर जाने पर पत्नी व बच्चों को असुरक्षा रहती है। अस्पताल में भर्ती होने पर कौन अस्पताल में मरीज के साथ रहेगा और घर पर कौन रहेगा यह भी समस्या होती है, जबकि संयुक्त परिवार में सभी मिलजुलकर किसी भी समस्या का समाधान कर लेते हैं। एकल परिवार में छोटे बच्चों को दादा-दादी की गोद की स्नेहिल ऊष्मा भला कहां मिल पाती है और यदि पति-पत्नी में झगड़ा हो जाये तो बच्चों का जीवन असहज एवं दु:खमय हो जाता है।

परिवार में विघटन के मुख्य कारण व निवारण:

(1) किसी भी प्रकार का पक्षपात भाव होना। जैसे कि अपने पति या बच्चों में और अन्य बच्चों में भेदभाव करना।

(2) परिवार के सभी सदस्यों की आय समान हो ही नहीं सकती है। इस स्थिति को जैसी है वैसी ही स्वीकारनी होगी। कम आय वाले को सहयोग स्नेह के साथ अधिक उपार्जन हेतु दी गई प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता के परिणाम सुखद होते हैं।

(3) स्वच्छन्दता की चाह। वैसे यह कोई अस्वाभाविक चाह नहीं है, मानवीय प्रवृत्ति है, किंतु परिवार के सदस्य पर्याप्त पारस्परिक स्वतन्त्रता को स्वीकार लें, पचा लें तो विवाद नहीं होंगे।

(4) यथासंभव भोजन पर सभी लोग साथ बैठे, प्रार्थना भी साथ करें। ताने, कटाक्ष एवं गलतफहमी मन में न पालें, व्यंग्य की बातें या उपेक्षा न करें। स्नेह और प्रोत्साहन एवं प्रशंसा के स्रोत को बहता रखें।

(5) घर के मुखिया का सम्मान करें, आज्ञापालन करें, अपना दृष्टिकोण जो भी स्पष्ट कहें एवं पारिवारिक एकता, प्रेम व मैत्री भाव हेतु मन में गलत धारणा न बनायें। यदि पिता स्वयं अपने माता-पिता व पूज्यजनों को प्रणाम करता है तो उन्हें देखकर बच्चे भी प्रणाम करना सीख जायेंगे।

पारिवारिक जीवन में संयम आवश्यक है। संयम वह कुंजी है जो शांति और आनन्द का द्वार खोलती है। एक अनुरोध मैं बुजुर्ग लोगों से करना चाहता हूँ कि उन्हें अपने जीवन को प्रेममय बनाना चाहिए परिस्थितियों व समय के अनुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करना चाहिए। घर परिवार की जिम्मेदारी को छोड़कर अपने नाती पोतों के साथ खूब प्यार करें, आमोद-प्रमोद करें। प्रतिदिन उनके साथ प्रेमपूर्वक ईश्वर की प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि करें और हंसते मुस्कुराते अपने जीवन के शेष दिनों को प्रेम से व्यतीत करें।

सासूओं को अपनी बहुओं के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह अपनी बेटियों के साथ करती है। बहू से कोई गलती हो जावे तो उन्हें डांटने के बजाय उसे प्रेमपूर्वक समझाना चाहिए तथा बहुओं को भी सास को अपनी माता के समान समझना चाहिए तथा उनके साथ मिल-जुलकर सभी कार्य सम्पन्न करना चाहिए। परिवार में बालकों को शुरु से अच्छे संस्कार देने के लिए माता-पिता को उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखानी चाहिए और स्वयं के आचरण को भी अच्छा बनाये रखना चाहिए।

सहनशीलता एक ऐसा गुण है जिसे आप अपना लेंगे तो परिवार में कभी लड़ाई-झगड़ा होगा ही नहीं यदि आपका कभी कोई अपमान करे या

आपको आर्थिक नुकसान पहुँचाये तो आप उसे सहन करके क्षमा कर देवें। उसके प्रति क्रोध या बदले की भावना नहीं रखेंगे तो अपमान कर्त्ता या हानि पहुँचाने वाले को कुछ समय पश्चात अपनी गलती का स्वत: ही अहसास हो जायेगा और वह अपने मन के सारे मैल धोकर आपसे क्षमा याचना करेगा। फिर देखिए कितना प्रसन्न होगा आपका मन, चित्त को कितनी शांति व आनन्द मिलेगा। इसलिए अपने हृदय के भीतरी हिस्से से एक-दूसरे के प्रति गलत विचारों को निकालकर दूर फैंक देना चाहिए। जैसे सवेरे सवेरे हम अपने घर को झाड़ पोंछकर स्वच्द बनाते है झाड़ने के बाद जो कचरा इकट्ठा होता है उसे बाहर फैंक देते हैं उसी तरह क्रोध द्वेष की बातें, झगड़े फसाद की बातें, ईर्ष्या मत्सर की बातें रूपी कचरे को भी मन में नहीं रखना चाहिए।

परिवार में एक दूसरे की सेवा करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझना चाहिए। परमात्मा ने हमें जो शरीर प्रदान किया है। उससे हम परिवार, समाज की कुछ सेवा कर सकें तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। आजकल एक नई प्रथा समाज सेवा (सोशल सर्विस) की प्रचलित हो गई है। वस्तुत: समाज सेवा अच्छी बात है। किन्तु परिवार की उपेक्षा करके समाज सेवा करना कहां तक उचित है। लायन्स या रोटरी क्लब के माध्यम से आप अस्पताल में जाकर रोगियों की मदद करते हैं यह खुशी की बात हैं किन्तु उसी समय आपके परिवार में बुजुर्ग दादा दादी, माता-पिता बीमार हों और उन्हें दवा दिलाना आप भूल जाते हैं तो सेवा को केवल प्रदर्शन ही कहा जायेगा। सिर्फ नाम के लिए प्रतिष्ठा के लिए, सम्मान के लिए समाज सेवा करना शोभनीय नहीं है।

सारांश यही है कि पारिवारिक सौहार्द के लिए परिवार के सभी व्यक्तियों में सहनशीलता, सेवा, क्षमा व संयम की भावना होना चाहिए। यदि सभी अपने अहं भाव को त्याग कर सकारात्मक सोच से एक दूसरे के प्रति प्रेम व विश्वास रखेंगे तो परिवार स्वर्ग बन जायेगा। हम अपने घर को मंदिर बनाएं। प्रतिदिन शाम को घर में सत्संग प्रार्थना करें। दूरदर्शन के अश्लील कार्यक्रम तथा अश्लील साहित्य से बच्चों को दूर रखें अच्छे संस्कारों के लिए सत्संग नित्य करें। हमारी यही भावना होनी चाहिए कि मेरा घर स्वर्ग समान हो मुझे अपने परिवार को सुखी बनाना है।

- प्रधान संपादक ''अध्यात्म अमृत'',
ज्ञानमन्दिर मदनगंज, किशनगढ़
(राजस्थान)-305801

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
12. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
13. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
14. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
15. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
16. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
17. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

सौ वर्ष तक कैसे पाएँ-आरोग्य!

- डॉ. हर्षवर्धन

जिस प्रकार स्कूटर, कार अथवा हवाई जहाज पेट्रोल तथा डीजल का इस्तेमाल अपनी मशीनरी को चलाने के लिए करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य का शरीर भी एक मशीन के समान है और इस शरीर रूपी मशीन को निरन्तर चलाते रहने के लिए जिस ईधन की आवश्यकता है, वह है भोजन। इस भोजन की हर शरीर को आवश्यकता होती है, इसलिए भोजन जीवन की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस भोजन की प्राप्ति के लिए हम सब जीवन-भर मेहनत करते हैं-हमारे देश में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को यह पर्याप्त मात्रा में प्राप्त भी नहीं हो पाता और बहुत सारे लोगों को आवश्यकता से अधिक प्राप्त हो जाता है। लेकिन शरीर भोजन का उपयोग शरीर के द्वारा की जा रही शारीरिक क्रियाओं या व्यायाम के आधार पर करता है।

शरीर साधारणतया तीन किस्म के भोजन का इस्तेमाल करता है-यह है....प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं वसा (फैट)। हम जो भी भोजन करते हैं, उसमें यह तीन विभिन्न मात्राओं में मौजूद होते हैं। गेहूँ, चावल जैसे भोजन में कार्बोहाइड्रेट्स ज्यादा मात्रा में, दाल, दूध, इत्यादि में प्रोटीन अधिक मात्रा में तथा मक्खन एवं तेलों में वसा (फैट) की मात्रा भरपूर रहती है।

इनमें से कोई भी शरीर के लिए पेट्रोल या डीजल जैसे ईधन का काम कर सकता है। शरीर के ईधन-चाहे वह प्रोटीन हो, कार्बोहाइड्रेट हो अथवा वसा हो, शरीर सभी को जरूरत पड़ने पर तोड़ कर ऊर्जा एवं शक्ति में परिवर्तित कर लेता है जो कि शरीर की सभी क्रियाओं का संचालन करने के लिए आवश्यक है। पैदा होने के समय शरीर की स्वस्थ रचना होती है। साधारणतया उसे 100 वर्ष तक आसानी से सुरक्षित रखा जा सकता है-इस 100 वर्ष की सुरक्षा के लिए सबसे आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है शरीर को मिलने वाले ईधन का संतुलित अनुपात में होना। यदि प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं वसा का अनुपात संतुलित नहीं है तो शरीर में धीरे-धीरे अनेक विकार पैदा हो जाएँगे और बढ़ते-बढ़ते वह किसी रोग का रूप ले सकते हैं।

समाज के अधिकांश लोग बचपन में सभी को पढ़ाई गई इस बात को जानते हुए भी शायद भूल जाते हैं और संतुलित आहार से जुड़े अनेक विषयों से अनभिज्ञ रहना हमारे लिए रोग उत्पत्ति का कारण बन जाता है। दुर्भाग्य से आजकल चिकित्सक दवाई का लम्बा विवरण देने में तो चतुराई से काम लेते हैं लेकिन भोजन से जुड़ी इसकी आवश्यक स्वास्थ्य शिक्षा के पहलू की चर्चा करने में संकोच करते हैं। किसी ने सच ही कहा है कि.... 'अगर आज के चिकित्सक, आहार विशेषज्ञ नहीं बने तो कल के आहार विशेषज्ञ चिकित्सक अवश्य बन जाएँगे।...

सभी प्रकार के भोजन में शरीर को ऊर्जा प्रदान करने वाले प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं वसा के अलावा विटामिन, मिनरल्स, फाइबर्स और पानी होता है।... किसी भी भोजन के तत्वों को इन्हीं सात भागों में बाँटा जा सकता है। शरीर को अपने विकास एवं ठीक प्रकार से बनाये रखने के लिए इन सबकी पर्याप्त मात्रा में आवश्यकता है। लेकिन सभी का संतुलन आवश्यक है-किसी की कमी या आवश्यकता से अधिक मात्रा शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न कर सकते हैं।

कार्बोहाइड्रेट वह भोजन का अंग है जो हमें तुरन्त रोज के कार्यों को सम्पन्न करने के लिए ऊर्जा प्रदान करता है। यह हमें फल, सब्जियों, ग्लूकोज, शहद, चीनी, चावल, जौ इत्यादि से प्राप्त होते हैं। प्रोटीन हमारे शरीर रूपी निर्माण की ईंटे हैं तथा यह मांसपेशियों का अधिकांश भाग बनाते हैं। प्रोटीन हमारे शरीर के टूटे-फूटे अंगों की मरम्मत करने में भी सहायक होते हैं तथा प्रोटीन 24 अमीनो एसिड से बनते हैं, जिसमें से 6 शरीर के लिए विशेष आवश्यक माने जाते हैं क्योंकि इन्हें शरीर पर्याप्त मात्रा में नहीं बना पाता है। प्रोटीन को शरीर के लिए पूर्ण माना जाता है अगर उसमें सभी आवश्यक अमिनो एसिड पर्याप्त मात्रा में हो। दाल, सोयाबीन, अनाज, दूध, पनीर, प्रोटीन के स्रोत हैं।

साधारणतया अनाज व दालों में किसी न किसी आवश्यक अमिनो एसिड की कमी होती है परन्तु दाल

और चावल को एक साथ खाने पर वह ऐसा मिश्रण बनता है जिसमें सभी अमिनो एसिड शरीर को उपलब्ध हो जाते हैं और हमें मांस से प्राप्त प्रोटीन लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वसा यानि तेल एवं कोलेस्ट्रोल शरीर का ऊर्जा स्टोर बनाते हैं। जब भी शरीर को अधिक मात्रा में खाने के माध्यम से अधिक मात्रा में खाने के माध्यम से अधिक ऊर्जा दी जाती है तो वह वसा के रूप में परिवर्तित होकर शरीर में जमा हो जाती है। इसी से मोटापे तथा हृदय सम्बन्धी रोगों की शुरुआत होती है।

विटामिन शरीर को बहुत थोड़ी मात्रा में चाहिए। इनसे ऊर्जा तो उत्पन्न नहीं होती पर शरीर को चलाने के लिए अनेक आवश्यक रासायनिक गतिविधियों के लिए इनकी आवश्यकता होती है। सभी विटामिनों का अपना एक विशेष कार्य है और उसकी कमी शरीर में विशेष रोग पैदा करती है। फल व सब्जियाँ विटामिन को भारी मात्रा में शरीर को प्रदान करती हैं।.... इसके अलावा दूध, अनाज, दालों से अनेक विटामिन प्राप्त होते हैं। विटामिन, त्वचा, आँख, हड्डियों, स्नायु तथा हृदय को सुरक्षा प्रदान करते हैं। इनकी कमी शरीर में अंधापन, मसूड़ों से खून आना, कमजोर हड्डियाँ तथा दिमाग की धीरे-धीरे नष्ट होने वाली बीमारियाँ पैदा करती हैं। शरीर के लिए कैल्शियम, पोटैशियम और सोडियम भी आवश्यक तत्व हैं जो हड्डी के विकास, खून को बनाने वाले हीमोग्लोबिन तथा खाने को पचाने में सहायक, पाचन एन्जाइंम्स के लिए आवश्यक हैं। इनके बगैर जीवन संभव नहीं-सभी साधारण खानों तथा जूसों के माध्यम से हमारे शरीर को ये प्राप्त होते हैं।

शरीर के विकास में फाइबर की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह हमें केवल शाकाहारी भोजन से ही प्राप्त होते हैं। मांसाहारी भोजन में इनकी मात्रा नगण्य होती है। यह हमें अनाजों, फल तथा सब्जियों से भारी मात्रा में प्राप्त होते हैं। यह शरीर में कॉलेस्ट्राल को कम करने, कब्ज से बचाने तथा वजन घटाने तथा हृदय रोग से बचने एवं बड़ी आंतो के कैंसर से बचाने में सहायक होते हैं। शरीर को 20-35 ग्राम प्रतिदिन की मात्रा में इनकी आवश्यकता होती है। शरीर की आवश्यकताओं में पानी की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शरीर का कोई कार्य पानी के बगैर संभव नहीं। चबाने, पचाने, भोजन को आंतो से रक्त में अवशोषित करने जैसे सैकड़ों कार्यो में इनकी आवश्यकता पड़ती है। यह हमारे रक्त का 50 प्रतिशत हिस्सा है और शरीर से गुर्दो के माध्यम से सभी नुकसान पहुँचाने वाले विष की सफाई करने में सहायता करता है, शरीर के तापमान को ठीक रखता है और शरीर के सब हिस्सों में ऑक्सीजन पहुँचाने में विशेष सहायक है।

आपकी सेहत का जाम है बादाम

- यादादाशत कमजोर है तो बादाम अचूक इलाज है। बादाम की दस गिरी रात को पानी में भिगोकर सुबह छिलका उतारकर बारीक करके 20 ग्राम मक्खन, 10 ग्राम मिश्री मिलाकर एक महीने तक खाएं। दिमाग की कमजोरी दूर हो जाएगी और याददाशत अच्छी हो जाएगी।
- बच्चे को अक्सर कुछ-कुछ होता रहता है तो उसे हृष्ट-पुष्ट व निरोगी बनाने के लिए रोजाना एक से दो बादाम पत्थर पर घिसकर चटाएं। इससे बच्चों का दिमाग भी तेज होगा।
- हृदय रोगियों के लिए तो बादाम काफी फायदेमंद साबित होता है। इसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड अधिक होता है और यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करता है वह अच्छे कोलेस्ट्राल को बढ़ाता है। इस वजह से हृदय की नलियों में रूकावट कम होती है और इसके प्रयोग से दिल का दौरा होने की आशंका कम हो जाती है।
- बाल कमजोर हैं तो बादाम का तेल कारगर साबित होगा। स्वस्थ बालों के लिए विटामिन ए,बी और सी के साथ कैल्शियम की विशेष जरूरत होती है। रोज तीन-चार भीगे हुए बादाम खाने से न सिर्फ बाल मजबूत होते हैं, नाखून व त्वचा भी चमकदार हो जाती है।
- बादाम में पोटैशियम अधिक मात्रा में होती है और सोडियम कम मात्रा में। इस कारण इसके सेवन से रक्त का संचार ठीक रहता है और पूरे शरीर में अच्छी तरह ऑक्सीजन पहुंचता है।

-सभार हिन्दुस्तान टाईम्ज़

प्रकृति से सीखे नम्रता का पाठ

कुछ युवा स्वयं को बहुत बुद्धिमान समझते हैं। वे अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए किसी भी प्रकार का कार्य करनें से परहेज नहीं करते हैं। वे अपने मित्रो, सहकर्मियों के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं और इसे प्रतिद्वंदिता का नाम देते हैं। स्वयं को ज्यादा समझदार और तेज बुद्धि वाला समझना उचित नहीं है। हम रोज ही देखते हैं कि कौआ खुद को कितना चालाक समझता है। वह कभी फंदे में नहीं फंसता है। भय की तनिक आंशका होते ही वह उड़ जाता है। वह खाने की चीजें बड़ी चतुराई से उड़ा ले जाता है। इतना चतुर होते हुए भी उसे त्याज्य वस्तु को भी खाना पड़ता है और लोग उसे त्याज्य वस्तु खाने वाले प्राणी का ही नाम देते है। ज्यादा चालाकी करने का यही परिणाम होता है। यदि युवाओं को अपने कर्तव्यों के बल पर ऊँचा उठना है या महान बनना है तो पहले नम्र बनना पड़ेगा। चालक पक्षी का घोंसला नीचे होता है, पर वह आसमान में बहुत ऊँचा उड़ता है। ऊँची जमीन में खेती नहीं होती उसके लिए नीची जमीन चाहिए जहां पानी जम सके। तभी खेती हो सकती है। फलदार वृक्ष की डालियां सदा नीचे की और झुकती हैं। अगर आप बड़े बनना चाहते हैं, तो पहले नम्र बनें। मैं जो कह रहा हूँ वही सत्य है। मेरी बातों पर सभी को ध्यान देना चाहिए और उसका अनुकरण भी करना चाहिए। इस प्रकार का अहंभाव या आचार्यपन का अभिमान नहीं रखना चाहिए। जो अज्ञानी होते हैं, वे ही अहंकारी होते हैं। ज्ञानी पुरुष का भी अपने ज्ञान का प्रदर्शन नहीं करते हैं। उनके मुख पर हमेशा कुछ न कुछ जानने का भाव रहता है। ज्ञानलाभ उसे ही मिलता है, जिसमें गर्व नहीं होता है। बरसात का पानी नीची जमीन पर ही ठहरता है वह ऊंची जगह पर ठहर नहीं पाता। तराजू का जो पलड़ा भारी होता है, वह नीचे आ जाता है। जो हल्का होता है, वह उपर उठ जाता है। इसी तरह जो व्यक्ति गुणी और सामर्थ्यवान होता है, वह सदा नम्र और विनयशील होता है। मूर्ख व्यक्ति ही झूठे अहंकार और अभिमान से फूले रहते हैं। कुछ लोग नम्र होने का ढोंग रचते है। वे अकसर कहते हैं कि मैं तो कीट के समान हूँ। इसप्रकार स्वयं को कीट कहते-कहते कुछ दिनों के बाद मनुष्य वास्तव में कीट की तरह दुर्बल बन जाता है। मन में कभी हीन भाव या हताशा सबसे बड़ा शत्रु है। हताश हो जाने से धर्मपंथ पर अग्रसर नहीं हुआ जा सकता। जिसका जैसा भाव होता है उसे वैसा ही फल लाभ मिलता है। जब तक आप नम्र या फिर बच्चों की तरह सरल नहीं हो जाते, तब तक ज्ञान लाभ नहीं मिल सकता है। अब तक प्राप्त हो चुके विषय ज्ञान को भूलकर बालक की तरह नादान बन जायें। तभी आप आगे अनवरत ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे। सरल और सहज होने पर सिर्फ इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में आसानी होती है, बल्कि ईश्वर की भी प्राप्ति हो सकती है। जिस तरह जोती हुई जमीन में, जिसमें कंकड़ पत्थर न हो, बीज पड़ते ही पेड़ उग जाता है और वह शीघ्रता से बढ़कर फल भी देने लगता है। उसी प्रकार सरल होने से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। लेकिन सरल होने के लिए व्यक्ति को बहुत तपस्या व साधना करनी पड़ती है। स्वयं को राग-द्वेष रहित करना पड़ता है। कठिन साधना के बाद ही व्यक्ति सरल और उदार हो पाता है। सरल हुए बना ईश्वर की प्राप्ति असंभव है। सरल हृदय व्यक्ति के सम्मुख ईश्वर स्वयं अपना स्वरूप प्रकट कर देते हैं, लेकिन सरल और सत्यवादी बनने के नाम पर कोई मूर्ख न बन बैठे। इसलिए आप भक्ति करे, भन्त बनें पर बुद्ध न बनें।

दूसरी और मन को बेलगाम भी न छोड़े। जिस तरह हाथी को यदि मुक्त छोड़ दिया जाता है, तो वह चारों और पेड़-पौधों को तोड़ते-रोंदते हुए चलने लगता है, पर जब महावत उसके सिर पर अकुंश का वार करता है, तब वह शांत हो जाता है। इसी प्रकार मन को बेलगाम छोड़ देने पर वह तरह-तरह की फालतू चीजों का विचार करने लगता है। संसार के प्रति जितनी अधिक आसक्ति होगी, ज्ञान प्राप्ति की संभवना उतनी ही कम होगी। संसार के प्रति आसक्ति जितनी ही कम होगी ज्ञान प्राप्ति की संभावना भी उतनी ही अधिक होगी। विवेक रूपी अंकुश का वार करते ही मन रूपी हाथी शांत व स्थिर हो जाता है। मन में सदा यह विवेक विचार करते रहना चाहिए कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। नित्य क्या है और अनित्य क्या है? इसके बाद जो अनित्य है उसे छोड़कर सदैव नित्य में मन लगायें।

- प्रस्तुति कर्ण आर्य आत्मशुद्धि आश्रम

कुरूतियों का कुचक्र तोड़ना ही होगा

- पं. उम्मेद सिंह विशारद, मो. 9411512019, 9557641800

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास की अनुभूमिका में लिखते है कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्यों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्धज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्या सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अने प्रयोजन में न फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति इसकी पूर्ति में लिखेगे। सर्वशक्तिमान परमात्मा एकमत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें।

ध्यानाकर्षण

इस लेख में मैंने केवल सामाजिक मान्यताओं व दैनिक दिन चर्या में जिस-जिस मान्यताओं से समाज को हानि हो रही है। उन-उनका संकेत मात्र उल्लेख किया है जिनसे अन्धविश्वासों की परम्परा बनी रहती है। उस-उस मान्यताओं पर विचार करके समाज में व्याप्त रूढ़ियों को हटाने में अपना योगदान देने का कष्ट करें। कुप्रथाएं और परम्परायें कोई ईश्वर का आदेश नहीं होती ये सभी सुख सुविधा तथा सुव्यवस्था के लिये समाज द्वारा बनाई जाती है। यदि हम सड़ी गली पुरानी रूढ़ियों की हानि उठा कर भी प्राचीनता के लोभ में अपनाते रहेंगे तो हम जमाने से पीछे रह जायेंगें कुप्रथाओं और कुपरम्पराओं को हर हाल में बदलना ही होगा, समय का यही तकाजा है।

भ्रान्तियां हटाये कुरूतियां मिटाये:- अपने देश की अवगति में वैचारिक भ्रान्तियों की सबसे अधिक भूमिका रही है। महाभारत काल के बाद अन्धविश्वास वैदिक प्रचारक की मान्यताओं के कारण लम्बे समय तक देश गुलामी के जंजीरों में जकड़ा रहा है, और आज भी कायम है। जो कभी अपने स्वतन्त्र प्रखर वैदिक मान्यताओं एवं दूरदर्शी चिन्तन के कारण अध्यात्म तत्व दर्शन का अन्वेषक माना जाता था, वही धार्मिक, सामाजिक मूढ मान्यताओं तथा कुपरम्पराओं का केन्द्र बन गया है। आज रूढ़ी मान्यताओं का रूप बदल रहा है। आर्य समाज व अन्य समाज सुधारक विचार धाराओं की संस्थाओं व अनेक मत मतान्तरों के नेतृत्व को आज आगे आकर सत्य वैचारिक वैदिक मान्यताओं का प्रचार करना होगा।

प्रथा-परम्परायें सोच समझ कर अपनाए:- जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति अपने समाज परिवार और कुल की निर्धारित परम्पराओं का पालन करता है। प्रचलित परम्पराओं में कई तो ऐसी है जिनकी किसी काल में कोई उपयोगिता रही हो पर आज अनावश्यक हो गयी है। अपितु कलंक बन गयी है। उनको हटाना आवश्यक हो गया है।

हमारी अविवेकीय विचार शीलता ही कुरुतियां फैलाती है।

मान्यताओं और प्रथा परम्पराओं के सम्बन्ध में अधिकांश लोग अन्ध परम्पराओं के शिकार होते हैं और लकीर के फकीर बने रहते हैं। ऐसे पूर्वाग्रह उन्होने अपने समीपवृती लोगों से सीखे होते हैं और अन्ध परम्पराओं को गले लगाकर रखते हैं। इसलिए आवश्यकता है, आर्षज्ञान प्राप्त करके प्रचलित कुरूतियां मिटाने की है।

अभिशाप जैसे प्रमुख कुप्रचलनः

हमारी समाज व्यवस्था में चार मौलिक दोष हैं। (1) वंश के आधार पर ऊंच नीच की मान्यता (2) वेश धारण करने भर से अज्ञानी, वेद विहीन को संत मान लेना। (3) कन्या और पुत्र में भेदभाव करना। (4) विवाह में कन्या पक्ष को शोषण आदि इन कुरुतियों के रहते हम सम्ये समाज के सदस्य नहीं कहला सकते हैं।

दिशा-धारा मोडनी ही पड़ेगी

गम्भीरता पूर्वक देखने और सोचने से ऐसा प्रतीत

होता है कि समझदारों के ऊपर भी नासमझी सवार हो गई हैं। हम लाभ के स्थान पर हानी ही अर्जित कर रहें हैं।

परम्पराओं में घुसी हुई आवांछनीयता:-

विज्ञान ने अपनी प्रमाणिकता स्वतन्त्र चिन्तन का सहारा लेकर की है। सत्य और वेद ज्ञान तथा सृष्टिक्रम को मानकर परम्पराओं को माना जाये तो कई अन्धविश्वास व परम्परायें समाप्त हो सकती हैं।

विचित्र ये सामाजिक प्रचलन

क्या उचित हैं क्या अनुचित हैं, इसका निरधारण वेद ज्ञान व विज्ञान के आधार पर किया जा सकता है। अस्तु उचित अनुचित के बीच अन्तर करते समय देशकाल एवं परिस्थितियों के आधार पर उपर्युक्त निरधारण करना चाहिए।

प्रथा-परम्पराये सोच-समझ कर ही अपनाएं

प्रचलित परम्पराओं में कई ऐसी है जिनकी किसी काल में आवश्यकता रही हो, पर अब अनावश्यक हो गई हैं। ऐसी अनुचित परम्पराओं को छोड़ना ही बुद्धिमतता है। छाती से चिपकी निरर्थक परम्पराये व प्रथाएं देश काल व परिस्थिति अनुसार बदल देनी चाहिए।

परम्परा नहीं औचित्य देखे:-

प्रचलनों प्रथाओं परम्पराओं में यदि औचित्य का समावेश न हो तो वो अन्धविश्वासों से जकड़ जाते हैं तथा अनगणित प्रकार की समस्याओं को जन्म देकर अनेकों प्रकार से अपने को और समाज को क्षति पहुंचाते रहते हैं तथा विकास क्रम को अवरूद्ध करते रहते हैं।

विवेकहीन कुप्रचलन:- परम्परायें अच्छे व बुरे लोगों के मन में बस जाती है तथा विचार भक्ति में इतनी गुजांइश ही नहीं रहती कि उनके गुण दोषों पर विचार कर सकें कई बार तो अनुपयुक्त समझते हुए भी कुप्रथाओं को लोग कार्यान्वित करते हुए अपना बढ़प्पन समझते हैं, और गलत परम्पराओं को प्रषय देते रहते हैं।

मुहूर्त से बड़ा विवेक:- शुभ व अशुभ मुहूर्त के लिए समाज में बड़ा अज्ञान फैला हुआ है और शुभ अशुभ के चक्कर में समाज कई बार बड़ी हानी कर लेता है। देश काल परिस्थिति तथा ऋतु अनुसार, स्वास्थयनुसार जो भी समय हो वही हमारे लिए शुभ होता है। शुभ अशुभ प्रचलनो को नहीं औचित्य को मान्यता देनी चाहिए।

फैशन के नाम पर चुस्त कपड़े न पहने:-महिलाएं इस सम्बन्ध में पुरुषों से आगे हैं। वे शरीर पर इतने कसे हुए चुस्त कपड़े पहनने लगी हैं। नारी लज्जा दिनों दिन समाप्त हो रही हैं तथा अत्यधिक अंग प्रदर्शन से समाज में बलात्कार की घटनाऐं दिनोदिन बढ़ रही हैं। नारी की शोभा ढीले-ढाले प्रत्येक अंगो को ढकने वाले कपड़ों से ही बनती है। चुस्त कपड़ो का प्रचलन बन्द होना चाहिए तथा सौन्दर्य प्रसाधन में भी आधुनिक अन्धविश्वासों को भी समाप्त करना होगा।

प्रत्येक पारिवारिक व सामाजिक उत्सवों के नाम पर दिखावा आवांछनीय है।-समाज में विवाह समारोहों में अनावश्यक आडम्बर किया जाता है। व्यर्थ प्रदशनों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करना ही अपनी शान समझा जाता है। इसको रोकना होगा और उस व्यर्थ व्यय से जो धन बचेगा उसको अन्य रचनात्मक कार्यो में लगाना उपयुक्त है। सामाजिक कुरीतियां कैसे मिटे, तथा उन्हें प्रचलनों की कसौटी पर कसे, और आवांछनीय मूढ मान्यताओं को उखाड फैंके। बढ़े परिवर्तन के लिए बड़े प्रयास करने पड़ेंगे।

यह दृष्पवृत्ति निरोध आन्दोलन चलाना ही चाहिए।

हमें निम्न विषयों पर आन्दोलन करना होगा वह यह है जैसे 1. मांसाहार मांस व कटे हुए पशुओं का चमड़े का उपयोग। 2. नशेबाजी की बढ़ती प्रथा 3. पशु बलि 4. मृत्यु भोज 5. ऊंच नीच जाति को मानना 6. नारी तिरस्कार 7. बेईमानी 8. दहेज प्रथा 9. उत्सवों में अपव्यय 10. धार्मिक अन्ध विश्वास 11. असभ्यता 12. गुरुडम पूजा आदि-आदि। नव निर्माण की दिशा में उक्त सुधार आन्दोलन महत्वपूर्ण है। आर्य समाज

एवं अन्य जो सुधारवादी विचारक संगठनों को आगे आना पड़ेगा।

पूर्वाग्रह कुरूतियों पर अड़े रहना बुद्धिमता नहीं है।

मानव जगत में अधिकांश विचार शक्ति व्यर्थ की पूर्वाग्रह मान्यताओं पर चलती हैं जिसमें आपस में विरोधाभास होता है। यह पूर्वाग्रह विचार कैसे उत्पन्न होते हैं। मेरी समझ से हम हिन्दू-मुसलमान, ईसाई, जैन, सिख, बौद्ध क्यों होते है, क्योंकि हमने उन-उन परिवारों में जन्म लिया हुआ है, और उसकी मान्यताओं के संस्कार पैदा होते ही उस बालक पर डाल दिये जाते हैं, और वह मनुष्य आजीवन उसी विचारों पर चलता है एक प्रकार वह थोपे हुए मान्यता एवं विचार होते हैं। उसी को मनुष्य अपना स्वाभिमान समझा कर आपस में टकराव होता है और सभी अपने-अपने पूर्वाग्रह विचारों को ही सत्य समझते हैं। विचार कीजिए इतिहास गवाह हैं, इन पूर्वाग्रहों ने मानव समाज का भयंकर अहित किया हुआ है।

समाधानः- ईश्वर द्वारा प्राणी मात्र के लिए अन्य पदार्थों के साथ-साथ वेदों का ज्ञान भी दिया है, वेदों का ज्ञान सर्व कालिक, सार्वभौम, सर्व हितकारी, सत्य धर्म, सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार सबके लिए समान रूप से है। बस यही सुख शान्ति का मार्ग है। यह एक ऐसी स्टेज है जहाँ पर सभी पूर्वाग्रह अवैदिक विचार समाप्त होते हैं। यह नितान्त सत्य है मानव जगत में सम्पूर्ण सुख शान्ति, तभी प्राप्त हो सकेगी जब संसार वैदिक धर्म के मार्ग पर चलेगा। यह लेख संक्षिप्त विवेकहीन कुविचारों का संकेत मात्र है। मानव समाज में व्याप्त व्यर्थ की मान्यताऐं तभी समाप्त होगी जब मनुष्य मात्र ईश्वरीय वेद ज्ञान की शिक्षाओं पर चलेगा।

- गढ़ निवास, मोहकमपुर देहरादून,

हंसो और हंसाओं

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

- **इंजीनीरिंग का फार्म** भरते हुए **छात्र** ने पास खड़े **चौकीदार** से पूछा-कैसा है ये कॉलेज?
  चौकीदार बहुत बढ़िया है हमने भी यही से इंजीनीरिंग की है।
- **मास्टर जी**-मुहावरे का अर्थ बताओ-'सांप की दुम पर पैर रखना।
  स्टूडेंट-पत्नी को मायके जाने से रोकना।
  मास्टर जी- समझ नहीं पा रहे हैं कि इसे बाहर निकालु या क्लास का मॉनीटर बनाऊँ।
- **टीचर**-गलती होने पर माफी मांगने वाले को क्या कहते हैं
  स्टुडेंट-समझदार
  टीचर-और गलती न होने पर भी माफी मांगने वाले को क्या कहते हैं?
  स्टुडेंट-पति
- **पति** अपनी नाराज **पत्नी** को रोज फोन करता है...
  सासू जी-कितनी बार कहा कि वो अब तुम्हारे घर नहीं आयेगी, फिर क्यों रोज-रोज फोन करते हो?
  जमाई-सुनकर अच्छा लगता है इसलिए....
- **पत्नी**-5 किलो मटर ले लूं?
  पति-हां ले लो
  पत्नी-तुम्हारी राय नहीं मांग रही पूछ रही हूँ छील लोगे इतने..... या कम लूं।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाषः 9416054195

संविधान लागू होने की 68वीं वर्षगांठ-26 जनवरी 2018

- आई.डी. गुलाटी, 18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर-203001, मो. 08958778443

गांधीवादी-नेहरूवादी इसे सर्वोत्तम बताते हैं जबकि सावरकरवादी-परमानन्दवादी इसे हिन्दू विरोधी और सबसे घटिया कहते हैं। इसमें 125 संशोधन हो चुके हैं।

अंग्रेजी को सह राष्ट्र भाषा का दर्जा दिया गया है। उर्दू को बढ़ावा दिया जा रहा है। अन्य दोष इस प्रकार है:-

- अखिल भारतीय स्तर पर गोवधबन्दी और शराबबन्दी लागू करने का कोई प्रावधान नहीं है।
- परतन्त्रता काल में 3032 मन्दिर तोड़कर अवैध रूप से मस्जिदें बंना दी गई थीं इनकी पुर्नवापसी और जीर्णोद्वार की कोई व्यवस्था नहीं है।
- विभाजन के दोषी-मुस्लिम, ईसाई-को भी ध र्म प्रचार करने और धर्म बदलने का अधिकार देकर भयंकर गलती की गई है।
- सरकार ने 2004 से कर्मचारियों की पेन्शन बंद कर दी है लेकिन विधायकों और सांसदों तथा मत्रियों की पेंशन क्यों जारी है?
- अपराधी-जेल में बन्द-भ्रष्ट नेताओं को चुनाव लड़ने की छूट अभी तक क्यों जारी है?
- प्रत्याशियों की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता निश्चित की जाए। जैसे विधायकों के लिए बी.ए. तथा सांसदों के लिए एम. ए.।
- अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा या व्याख्या नहीं की गई है।
- मुर्दा हिन्दू की सोच समझते हुए कांग्रेस ने मुस्लिम ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसियों को अखिल भारतीय स्तर पर अल्संख्यक घोषित करते हुए अनुच्छेद 29 तथा 30 के द्वारा विशेषाधिकारी देकर महान गलती की है।
- देश को धर्म निरपेक्ष घोषित किया गया है ऐसी दशा में किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक मानना अनुचित और गलत है।
- पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय ने सही कहा है कि अल्प संख्यकों का निर्धारण राज्य स्तर पर किया जाना चाहिए।
- अस्थाई अनुच्छेद 370 को हटाने की कोई समय सीमा क्यों नहीं रखी गई?
- आरक्षण जाति के आधार पर कवेल 10 वर्षों के लिए दिया गया फिर बार-बार इसे क्यों बढ़ाया जाता है? अब इसका आधार आर्थिक कर देना चाहिए। 5 लाख रूपये वार्षिक की आय वालों को ही आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए।

यदि समाज 100 वर्षों तक नेहरू-गांधी समर्थक ही बना रहा तो देश की सत्ता मुस्लिम-ईसाई गठबन्धन के पास जा सकती है तब हिन्दू पुन: गुलाम हो सकता है अत: आ.भा. हिन्दू महासभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 की तन मन धन से सहयोग करके इसके सक्रिय कार्यकर्त्ता बनें।

गजल

जख्मों पे जख्म हम खाते रहे,
जिन्दगी फिर भी तुम को निभाते रहे,
गजल तो प्यार की कहानी चाहे मगर,
जख्म गहरे थे वो ही मुस्कराते रहे,
दोस्तों दुश्मनों में फर्क ना मिला,
नश्तरों पर नश्तर लगाते रहे
बेबफाई हमारे चरित्र में नहीं,
बेवफा लोग फिर भी बताते रहे,
हम अन्धेरों में हर दम डूबे रहे,
चाँद सूरज तो चेहरा छुपाते रहे

-कृष्ण सौमित्र साहित्यालंकार, बहादुरगढ़

प्राचीन भारत में शासन प्रणाली और राजनीति

- जगदीश चन्द्र शर्मा, संचालक ब्रह्मर्षि विद्याधर्म प्रचार मंच, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

आज संसार के विभिन्न देशों में अनेक प्रकार की शासन प्रणाली प्रचलित हैं जैसे-राजतन्त्र, प्रजातन्त्र, अधिनायकतन्त्र, निरंकुशतन्त्र। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार की राजनीतिक विचारधाराएं हैं जैसे-समाजवाद, साम्यवाद, अराजकतावाद और पूंजीवाद इत्यादि। भारत में इन शासन प्रणालियों और राजनीतिक विचार धाराओं का प्रयोग हजारों वर्ष पूर्व हो चुका है। भारत के प्राचीन इतिहास में इसके प्रमाण मिलते हैं। ये अलग बात है कि सैकड़ों वर्षों तक विदेशी शासकों के अधीन रहने के कारण विदेशी शासन की छाप इनके हृदय-कमल से अभी तक नहीं मिटी हो और सच्चाई उनके गले से नीचे न उतरे। जिस प्रकार चेचक जैसी बीमारी जाते-जाते अपने चिन्ह चेहरे पर छोड़ जाती है उसी प्रकार विदेशी लोग भी जाते-जाते उस देश में खंडहरों और समारकों के रूप में अपने निशान छोड़ जाते हैं। भारत इनसे अछूता नहीं है तभी तो यहाँ के लोग भारत माता की जय और वन्दे मातरम कहने में भी संकोच करते हैं। नेता लोग राजनीतिक रोटियाँ सेकते हैं। ये सब पराधीनता का ही परिणाम है कि आजतक राजभाषा हिन्दी को पूर्ण रूप से राजभाषा का स्थान नहीं मिला है वह आज भी अनुवाद की भाषा है जैसे कि भारत के विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली स्थानीय प्रादेशिक भाषाएं। कोर्ट कचहरी में तो सर्वत्र अंग्रेजी का ही बोलबाला है। उच्च शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी ही है। सभ्य कहलाने वाले समाज की बोलचाल की भाषा भी अंग्रेजी ही है। सफलता की कुंजी भी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान ही माना जाता है।

भूतकाल में भारत में शासन प्रणाली का उल्लेख करते हुए भारत के प्राचीन इतिहास ग्रंथ महाभारत में लिखा है-

न वै राज्यं न राजाऽऽसीन्न च दण्डो न दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम्॥ महा.शा.॥

अर्थात् सतयुग में न कोई राज्य था, न राजा, न दण्ड था और न दण्ड देने वाला, उस समय समस्त प्रजा धर्म के द्वारा ही एक-दूसरे की रक्षा करती थी।

कार्लमार्क्स भी अपनी समाजवादी विचारधारा का अन्तिम परिणाम राजाविहीन शासन प्रणाली मानता है। प्रथम समाजवाद फिर साम्यवाद और अन्त में अराजकतावाद।

जब धर्म का लोप हुआ तो लोगों में अनाचार फैलने लगा। लोग एक-दूसरे को लूट-खसोट कर खाने लगे। दुःख का मूल अज्ञान था। अज्ञान के कारण लोभ की प्रवृत्ति हुई फिर जंगल राज हो गया। जिस प्रकार एक बड़ा मच्छ छोटी-छोटी मछलियों को खा लेता है उसी प्रकार बलवान दुर्बलों को सताने लगे उनकी बहन बेटियों को छीनने लगे। फिर राजधर्म चला और मनु सृष्टि का प्रथम राजा हुआ। मनु के न चाहने पर भी प्रजाओं ने उस पर राज्य भार डाल दिया। मनु ने ब्रह्मा जी से कहा था "मैं पाप से बहुत डरता हूँ, राज्य करना बड़ा कठिन काम है। विशेषतः मनुष्यों में तो यह और भी कठिन हो जाता है। क्योंकि उनका आचरण सर्वदा असत्यपूर्ण होता है।" तब ब्रह्मा जी बोले, "तुम इस बात से मत डरो, पाप तो करने वालों को ही लगेगा। तुम बड़े बलवान और प्रतापी राजा होगे, कोई भी तुम्हें दबा नहीं सकेगा और तुम्हारे कारण हम सभी को सुख प्राप्त होगा। तुमसे सुरक्षित रहकर प्रजा जो धर्म करेगी उसका चौथा भाग तुम्हें मिलेगा। उस धर्म के प्रभाव से तुम हमारा पोषण भी कर सकोगे। अब तुम विजय के लिए निकलो और शत्रुओं का मान मर्दन करो। तुम्हें सर्वदा विजय प्राप्त हो। "ब्रह्मा ने राज्यधर्म की, रचना की और मनु को उसका पाठ पढ़ाया। ब्रह्मा आदि आचार्य था।

प्राचीन भारत की राजनीति का कथन है-

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानम सृजत्प्रभुः॥ मनु.॥

अर्थात् बिना राजा के इस लोक में भय से चारों ओर जल विचल हो जाता, इस कारण सब की रक्षा के लिए ईश्वर ने राजा को उत्पन्न किया।

इन्द्रानिल यमार्काणामग्नेश्च वरूणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः॥मनु.॥

जो व्यक्ति राजा के गुणों से सम्पन्न होता है उसमें, इन्द्र, वायु, राम, सूर्य, अग्नि, वरूण, चन्द्र और कुबेर इन आठ देवताओं के गुणों की झलक मिलती है। इस पृथिवी में कोई इसके सामने होकर नहीं देख सकता। उसमें सूर्य जैसा तेज होता है। इसलिए मनुष्य जानकर बालक राजा का भी अपमान नहीं करना चाहिए। -क्रमशः

पर्वों का पुंजः मकर संक्रान्ति

- मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

हमारे आर्य पूर्वज इस विशाल ब्रह्माण्ड में समय-समय पर होने वाले परिवर्तन का सूक्ष्म-निरीक्षण करते थे। उस परिवर्तन झंझावतों से मानव जाति की रक्षा कर प्रकृति के विभिन्न तत्वों को अपने विकास में सहायक बनाने का प्रयास करते थे। वैदिक ऋचाओं द्वारा प्रकट कर प्रकृति से सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न करते थे। वैदिक आर्यो ने सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि का गहराई से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। चूंकि ये सभी जड़ हैं, किन्तु परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं।

यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है-

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनींक चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च स्वाहा। -यजुर्वेद अ. 7 मन्त्र 42

इस सुन्दर और सरल मन्त्र में कहा गया है कि दिव्यगुण युक्त विद्वानों अथवा उपासकों का जीवन व बलरूप तथा अद्भुत रूप वाला वह परमेश्वर, सूर्य का, वायु का तथा अग्नि का मार्ग दर्शक है। यह द्यूलोक, पृथिवी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक को प्राप्त हो रहा है। चर अर्थात् प्राणी जगत का, अचर अर्थात् जड़ जगत का आत्मा वही सूर्य सबसे अभिसरणीय अर्थात् प्राप्त करने योग्य है। उसके प्रति हम सर्वस्व का समर्पण करते हैं। सूर्य से अधिकाधिक लाभ लेते हैं। इस प्रकार कारण स्वरूप परमात्मा से प्राप्त यह समस्त प्राकृतिक पदार्थ प्रकाशमान है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार जितने समय में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूर्ण करती है, उस अवधि को एक 'सौर वर्ष' कहते हैं। कुछ लम्बी मृदंग वर्तुलाकर जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उस परिधि को 'क्रान्तिवृत्त' कहा जाता है। हमारे मनीषियों ने इस क्रांतिवृत के भाग कल्पित किए हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थो के नाम पर रख लिए हैं। जैसे 1 मेष, 2. वृषभ, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृष्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ, 12. मीन। प्रत्येक भाग अथवा आकृति को राशि कहते हैं। ये सभी राशियां अथवा आकृतियां जड़ हैं, इनका अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण (प्रवेश) करती है, तब उसे 'संक्रान्ति' कहा जाता है।

मध्ययुग अथवा पौराणिक युग (4 से 6 शताब्दी ई.) में कतिपय स्वार्थी, धन-लोलुप, 'संस्कृतज्ञ' विद्वानों ने सामाजिक-मानसिकता की कमजोरी का लाभ उठाकर इन नक्षत्रों, ग्रहों आदि छोटे-बड़े पुञ्जों के आधार पर फलित ज्योतिष की कुछ कल्पित बातें गढ़ ली। भृगु-संहिता आदि नाम पर, सुखद दुखद ग्रहों की गपोड़शंसी बातें समाज में प्रचारित्त कर दी। मुहूर्त चौघड़िया, मंगल, सूतक, पञ्चक आदि की तथ्यहीन तथा बुद्धि विवेक के विरूद्ध तथा तर्क पर न ठहरने वाली बातों का समाज में एक मानसिक भय उत्पन्न करने वाले विचारों का प्रचार कर दिया। जप पुरश्चरण, दान दक्षिणा जिसमें भूमि, द्रव्य सोना, चांदी, पलंग बिस्तर तथा गोदान का प्रचार कर दिया। अनिष्टकारी ग्रहों नक्षत्रों (जड़ पदार्थ) के प्रतिनिधि बनकर संकट ग्रस्त जातक के दुख दूर करने का पाखण्ड फैला दिया। वस्तुत: देखा जाए तो इस राष्ट्र की सभी प्रकार की हानि जितना इन फलित ज्योतिषियों ने की है, उतनी हानि बाहरी आक्रमणकारियों ने भी नहीं की है। फलित ज्योतिष विज्ञान तथा तर्क के आधार पर तथा बुद्धि और विवेक के सम्मुख कहीं नहीं ठहरता। दुर्भाग्य है कि समाचार पत्र-पत्रिकाएं तथा टी.वी. के विभिन्न चैलन जन-साधारण की इसी मानसिक कमजोरी का लाभ उठाकर आर्थिक और व्यापारिक अवसर ढूंढने में लगे हैं। कम से कम पत्रकारिता के पवित्र क्षेत्र को फलित ज्योतिष की कालिमा से दूर रखना चाहिए।

प्रसंगवश, मरक संक्रान्ति की चर्चा चल रही है, अतएव इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि दक्षिणायन काल में रात्रियां दीर्घ कालीन और दिन छोटे होते हैं। सूर्य की मकर राशि (10वां क्रम) की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति (4 था क्रम) दक्षिणायन प्रारम्भ हो जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति का अत्यधिक महत्व है। मकर का सामान्य अर्थ मगर है। जिस प्रकार यूरोप के लोग 25 दिसम्बर को बड़ा दिन मानते हैं। हम भारतीय आर्यगण मकर संक्रान्ति को ही बड़ा दिन मानते हैं। साधारण जन

की मान्तया है कि इसी दिन से ही तिल-तिल बढ़ने लगता है। हमारा वर्षारम्भ आग्रहायण से होता है। चान्द्रमास के वर्ष के 10 दिन कम होने पर उसे 'लौंदमास' के द्वारा सौर मास के वर्षों में बराबर किया जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि ज्योतिष के ये सूक्ष्म सूत्र सर्वप्रथम आर्यों ने ही किए हैं। वैदिक साहित्य में ज्योतिष ज्योति शास्त्र को वेद पुरुष का नाम 'ज्योतिषं नैनं प्रोक्तम्' कहां गया है।

यजुर्वेद के अध्याय 30, मन्त्र 15 के अनुसार 60 संवत्सरों में 5-5 के 12 युग होते हैं। वर्णित प्रत्येक युग में क्रम से संवत्सर, परिवत्सर, इच्छावत्सर, अनुवत्सर और इद्वत्सर ये 5 संज्ञाएं हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि रोमन लोग 10 माह का वर्ष मानते थे। ज्यूलियस सीजर ने भारतीय ज्योतिष से प्रभावित होकर अपने वर्षों में परिवर्तन कर 10 माहों के स्थान पर 12 महीने किए। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि रोम निवासियों पर भारतीय ज्योतिष का बहुत प्रभाव था। ज्यूलियस सीजर ने जुलाई अपने नाम पर तथा 'अगस्त' अपने काका, 'ऑगस्टस' के नामानुसार रख दिया।

मुसलमान आज भी चान्द्रमासों को मानकर पिछड़े हुए हैं। यदि ये भी हिन्दू ज्योतिष से मिलकर कार्य करें तो इनकी ईद के चांद की अनिश्चितता की कठिनाई दूर हो सकती है। किन्तु यह सब गुण ग्राहकता पर निर्भर करता है।

मकर संक्रान्ति पर्व कृषक प्रिय त्यौहार है। कहा जाता है कि तक्षशिला में खगोल शास्त्रीगण 'लोई' शब्द से भली-भांति परिचित थे इसका सम्बन्ध सीधे सूर्य से ही रखा गया है। लोई शब्द का सामान्य अर्थ 'गरमाहट' है। हमारे पंजाब-हरियाणा के कृषक को गर्मी अधिक प्रिय है। गर्मी (उष्णता) से फसल अच्छी और खूब पकती है। यही कारण है कि मकर सौर संक्रांति पर कृषक बहुत खुश होते हैं। मकर संक्रांति से सभी लोग अपना व्यापारादि प्रारम्भ करते हैं और मैदानों में आना जाना प्रारम्भ कर देते हैं। इस क्षेत्र में जिस व्यक्ति के यहां गत वर्ष कोई शुभ कार्य जैसे विवाह, सन्तानोत्पत्ति आदि हुआ हो, वह आज रात्रि को होली जलाता है। अपने सगे-सम्बन्धियों तथा इष्ट मित्रों में यह पर्व मनाकर मिठाई आदि वितरण करते हैं।

भारतीय दर्शन में उत्तरायण काल तथा मृत्यु का गजब सह-सम्बन्ध माना गया है। कहते हैं, उत्तरायणकाल में दिवंगत की आत्मा पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करती है। किन्तु यह वैदिक सिद्धान्त नहीं है।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों में इस पर्व को अपनी मान्यता और श्रद्धा के अनुसार मनाते हैं। कहीं पोंगल (दक्षिण भारत) तथा माघ बीहू पूर्वोत्तर भारत (असम आदि) में मनाया जाता है। इन्हीं दिनों गंगा सागर (पं. बंगाल) में लाखों श्रद्धालू स्नान कर अपने को पुण्य भागी मानते हैं। पोंगल पर्व से तमिल का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। इसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। हमारे यहां धार्मिक मान्यता है कि 'सारे तीर्थ बारम्बार, गंगा सागर एक बार।' जहां तक माघ बीहू का सम्बन्ध है, असम में यह धान कटाई का पर्व होता है। यहां होली की तरह 'जी' जलाकर पूजन किया जाता है। असम वासियों में मान्यता है कि 'जी' जलाने (अग्नि) के साथ ही सारे पापों और बुराईयों का नाश हो जाता है। पोगल का अर्थ 'खीर' होता है। केरल के क्षेत्रों में भगवान 'अयप्पा' का प्रख्यात मन्दिर है और यह बड़ा भारी आराधना केन्द्र है। कहा जाता है कि इस दिन कुछ क्षणों के लिए मन्दिर के निकट पहाड़ियों में आग की लपटें उठती दिखाई पड़ती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इस शीत प्रधान अवसर पर **तिल, तुलं च ताम्बल, तरूणीतृप्त भोजनम् हिमन्ते न सेवन्ते ते नरा मन्द भागिनम्।** तिल, रूई, गुड़ तथा सफल गृहस्थ जीवन द्वारा इसका लाभ उठाना चाहिए।

- 'सुकिरण' अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

उद्‌बोधन

दयानन्द शीघ्र आओ देश की पुकार है।
धर्म का ही धर्म का चहु ओर बढ़ती .... है।
वृक्ष जो सींचा लहू से वह हो अब ..... रहा
आडम्बरों के बोझ से दिन रात धोखा दबा रहा
.... पड़ली जा रही

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस में आध्यात्मिक चेतना

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

सुभाष बाबू की भारतीय जीवन मूल्यों में अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने समय-समय पर कुछ सांस्कृतिक यात्राएं की थीं। इसी संदर्भ में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. डॉ. कुशलदेव शास्त्री ने गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी उपलक्ष्य में एक बहुत ही सारगर्मित लिखा है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपने कुछ संस्मरण स्वयं लिपिबद्ध किए थे, जो 'नेताजी सम्पूर्ण वाड्मय' में प्रकाशित हुए हैं। इनसे प्रतीत होता है कि नेताजी ने गुरुकुल कांगड़ी और वृन्दावन की यात्रा की थी। नेताजी के शब्दों में इस यात्रा का वर्णन इस प्रकार है-

सन् 1914 के ग्रीष्मावकाश में मैं अपने एक और मित्र के साथ तीर्थाटन के लिए निकल पड़ा। सभी स्थानों पर हम जितने साधुओं से मिल सकते थे, मिलते गए। हमनें गुरुकुल और ऋषिकुल जैसी शिक्षा संस्थाओं को भी देखा। हरिद्वार में एक आश्रम में लोगों को हमारे पहुंचने पर चिन्ता हुई। क्योंकि वे नहीं सोच सके कि हम सचमुच अध्यात्म से प्रेरित युवक हैं, अथवा उस रूप में छिपे क्रान्तिकारी।

यह यात्रा लगभग दो महीने की थी और इसके दौरान हम अनेक साधु-सन्तों से मिले बल्कि हमने हिन्दू समाज की कुछ स्पष्ट कमियों को भी देखा। इस प्रकार मैं घर लौटा तो पहले से अधिक जानकारी बटोर कर और साधु-संन्यासियों के प्रति अपनी पहले से अधिक श्रद्धा काफी हद तक खोकर। यह अच्छा हुआ कि मुझे यह अनुभव अपनी कोशिश से हुआ क्योंकि जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें हमें अपने आप ही जानना होता है। मंथुरा में हम एक पण्डे के घर में रहे और एक साधु के पास गए जो यमुना के उस पर जमीन की सतह के नीचे एक खोह में रहता था। उसने हमें सलाह दी कि हम घर लौट जाएं और संसार त्याग का विचार छोड़ दें। मुझे स्मरण है कि एक विरक्त द्वारा दी गई इस प्रकार की सलाह पर मुझे बहुत क्रोध आया था। जब हम मथुरा में रहते थे। तो एक आर्य समाजी के बड़े मित्र बन गए। वे हमारे साथ के मकान में रहते थे। इसे हमारा पण्डा सहन नहीं कर सका और उसने चेतावनी दी कि ये आर्य समाजी बड़े खतरनाक होते हैं, क्योंकि ये मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं। मथुरा में बन्दर जिन पर किसी प्रकार भी काबू नहीं पाया जा सकता था, ये हमें लगातार परेशान करते थे। अगर कोई भी दरवाजा या खिड़की जरा भी खुली रह जाती तो वह अन्दर घुस जाते और जो कुछ मिलता उसे उठा ले जाते या चिथड़े-चिथड़े कर देते। मथुरा छोड़ने पर हमें कोई अफसोस नहीं हुआ और हम वृन्दावन पहुंचे। वहां कई पण्डों ने हमें घेर लिया और रहने तथा खाने-पीने का प्रबन्ध करने की बात कही। उनके

शहीद

शहीद की राख से कौम की साख बनती है,
शहीद को मौत से कौम की हयात बनती है।

शहीद का लहू सर्द लहू को गरमा देता है।
शहीद शहादत से सोई कौम जगा देता है।

मुल्क का सरमाया कीमती जर होता है शहीद,
इमारतें कौम में नींव का पत्थर होता है शहीद,

हर कौम एक जिंदा यादगार है शहीदों की,
दुनियां की हर कौम कर्जदार है शहीदों की।

जिस कौम में शहीदों की याद रहती है,
वो कौम फलती है खुश व याद रहती है।

जो कौम कद्र नहीं करती शहीद के एहसानों की,
वो कहलाने की हकदार नहीं कौम इंसानों की।

शहीद के जनाजे की अनौखी शान होती है
दफन हो जहां वो जगह तीर्थ स्थान होती है।

जिन्दगी से मोहब्बत नहीं जिसे मौत से प्यार है,
सच पे मिटने वाला आजाद शहीदों का हकदार है।

– डॉ. दर्शनलाल आजाद, पानीपत

चुंगल से छूटने के लिए हमनें कहा कि हम गुरुकुल जाना चाहते हैं। उन्होंने तुरन्त अपने कानों में उंगली दी और कहा कि हमें यह किसी भी हिन्दु को वहां नहीं जाना चाहिए। लेकिन उन्होंने इतनी भलमन साहत दिखाई कि हमारा पीछा छोड़ दिया। (वैदिक गर्जना 2002)

नेताजी सुभाष के पूर्वज वस्तुत: बंगाल के चौबीस-परगना जिले के कन्दालिया ग्राम के निवासी थे। सुभाष बाबू का जन्म कटक में 23 जनवरी 1897 को हुआ था। कटक में ही इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। आपने बी.ए. में दर्शन शास्त्र विषय लिया था। इस कारण सुभाष आयु में ज्यों-ज्यों बड़े होते गए त्यों-त्यों उनमें गम्भीरता बढ़ती गई। सहपाठी नेतृत्व तथा संगठन गुण के कारण इनका खूब सम्मान करते थे। यद्यपि इनके पिता राजभक्ति की प्रवृति के व्यक्ति थे। किन्तु सुभाष बाबू में राष्ट्रभक्ति हिलोरे ले रही थी। सन् 1920 में आई.सी.एस. परीक्षा में चौथे स्थान पर उत्तीर्ण होकर सबको अचम्भित कर दिया। राजद्रोही सुभाष बाबू को सरकारी नौकरी कैसे सुहाती। नौकरी से त्याग पत्र देकर देशबन्धु की सेना में स्वयंसेवक बन गए। फिर राष्ट्रीय विद्यापीठ में आचार्य और कांग्रेस स्वयं सेवक दल के कप्तान बनाए गए। प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत के बहिष्कार के सम्बन्ध में सुभाष बाबू प्रथम बार गिरफ्तार हुए और उन्हें छ: माह की सजा दी गई। सन् 1928 की कलकता कांग्रेस में जनयात्रा में चलने वाले स्वयंसेवक दल के सेनानी सुभाष को बहुत प्रसिद्धि मिली। बाद में इण्डीपैण्डैंस लीग के प्रचार कार्य में लग गए। सन् 1938 में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में वे कांग्रेस के अध्यक्ष चुन लिए गए। एक बार विदेश यात्रा वे डी. वेलेश और मुसोलिनी से मिले। इधर भारत सरकार का कथन था कि यदि तुम्हें भारत में रहना है तो जेल में रहो। 26 जनवरी 1941 को सुभाष बाबू वेश बदलकर जियाउद्दीन बनकर देश से बाहर निकल गए। 21 अक्टूबर 1943 में उन्होंने आजाद भारत की अस्थाई सरकार की घोषणा कर दी। जापान, इटली आदि अनेक सरकारों ने इस सरकार की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार कर लिया। सुभाष द्वारा लगाई 'दिल्ली चलो' की आवाज ने सिपाहियों पर जादू सा असर किया। 28 मार्च 1944 का वह दिन भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा जब आजाद हिन्द की सेनाएं कोहिमा और मणिपुर के युद्ध में जी जान से जुट पड़ी थी। 23 अगस्त 1945 के बाद का जीवन आज तक भी रहस्य के पर्दे में है। हाँ, सुभाष' जिन्दा है, प्रत्येक भारतवासी के हृदय में तो अवश्य ही जिन्दा है।

असली सुख

चींटी हर समय काम करती रहती थी। कभी बिल की व्यवस्था करती, तो कभी राशन-पानी की। उसे काम करते अकर्मण्य कछुआ देखता रहता था। एक दिन चींटी अपने परिवार के लिए खाना लेने बाहर गई हुई थी। लौटकर आई, तो देखा कि कछुआ उसके बिल के ऊपर पत्थर बना बैठा हुआ है। चींटी ने उसके खोल पर दस्तक दी, तो उसने मुंह निकाला। चिढ़कर बोला-क्या है? चींटी बोली-यहां मेरा घर है, यहां से हट जाओ। कछुए ने कहा-देखती नहीं, मैं आराम कर रहा हूं। मुझे यहां से कोई नहीं हटा सकता। जाओ, मेरी तरह जाकर आराम करो। चींटी ने कहा-क्या तुम्हें अपने आलस में सुख मिलता है? कछुए ने कहा-मैं क्या, जो भी मेरी तरह अपने हाथ-पांव सभी कामों से खींचकर अपने में लीन हो जाता है, वही सुखी है। यह कहकर कछुआ फिर अपने खोल के भीतर समा गया। चींटी तो मेहनती थी। उसने कछुए के पास से बिल बनाया और जमीन के भीतर अपने बिल में चली गई। चींटियां संगठित होकर कछुए के नीचे पहुंच गई और उसे बेतरह काटने लगीं। आखिरकार चींटियों के प्रहार से बचने के लिए कछुए को आलस त्याग कर वहां से हटना ही पड़ा। चींटी आकर बोली- अब बताओ, तुम्हें सुख किसमें मिला? चींटियों से कटते रहने में या अपने हाथ-पांव हिलाकर वहां से हटने में? **कथा-मर्म:** संकट आने पर हम काम करें, इससे अच्छा है कि काम करने की आदत डाल लें, जिसमें असली सुख है।

प्रकृति का उल्लास:ऋतु वसंत

- कृष्ण कुमार यादव

माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी से ऋतुओं के राजा वसंत का आरंभ हो जाता है, इसमें न तो ग्रीष्म की रूमानी दग्धता है और न पावस की पच-पच पनिहल हरी-हरी मादकता, वसंत के सौन्दर्य में जो उल्लास मिलता है, वह जैविक नहीं है। यह एक सगुण अनुभूति है। इसी समय से प्रकृति के सौन्दर्य में निखार दिखने लगता है। वसंत में उर्वरा शक्ति अर्थात् उत्पादन क्षमता अन्य ऋतु की अपेक्षा बढ़ जाती है।

मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत,
मैं अग-जग का प्यारा वसंत।
मेरी पगध्वनि सुन जग जागा,
कण-कण ने छवि मधुरस माँगा।।
नव जीवन का संगीत बहा,
पुलकों से भरा दिगंत।
मेरी स्वप्नों की निधि अनंत,
मैं ऋतुओं में न्यारा वसंत। (महादेवी वर्मा)

वसंत का उत्सव प्रकृति और श्रृंगार का उत्सव है। इसके आगमन के साथ ही चारों तरफ मादकता और उल्लास छा जाता है। पूरे वर्ष को जिन छः ऋतुओं में बाँटा गया है, उनमें वसंत सबसे मनभावन मौसम है, न अधिक गर्मी, न अधिक ठण्ड। भारत में कृषि एवं मौसम के साथ त्योहारों का अटूट संबंध है। रबी और तारीफ फसलों की कटाई के साथ ही दो सबसे सुखद मौसम, वसंत और शीलतासप्तमी के अलावा चैत्र नवरात्रि में नव संवत्सर आरंभ, गुड़ी पड़वा, घटस्थापना, रामनवमी, चौती दशहरा, महावीर जयंती इत्यादि त्योहार मनाए जाते हैं। वास्तव में यह पर्व सिर्फ एक अनुष्ठान भर नहीं हैं, वरन् इसके साथ सामाजिक समसरता और तृत्य-संगीत का अद्‌भुत दृश्य भी जुड़ा हुआ है। वसंत ऋतु में चौती, होरी, धमार जैसे लोक संगीत, माहौल को और मादक बना देते है। तभी तो कविवर सोहन लाल द्विवेदी लिखते हैं-**आया वसंत आया वसंत/छाई जग में शोभा अनंत/सरसों में उठी फूल/बौरे आमों में उठीं झूल/पल में पतझड़ का/हुआ अंत/आया वसंत आया वसंत।**

माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी से ऋतुओं के राजा वसंत का आरंभ हो जाता है। इसमें न तो ग्रीष्म की रूमानी दग्धता है और न पावस की पच-पच पनिहल हरी-हरी मादकता। वसंत के सौन्दर्य में जो उल्लास मिलता है, वह जैविक नहीं है। यह एक सगुण अनुभूति है। इसी समय से प्रकृति के सान्दर्य में निखार दिखने लगता है। वसंत में उर्वरा शक्ति अर्थात् उत्पादन क्षमता अन्य ऋतु की अपेक्षा बढ़ जाती है। वन में टेसू के फूल आग के अंगारे की तरह लहक उठते हैं, खेतों में सरसों के पीले-पीले फूल वसंत ऋतु की पीली साड़ी-सदृश दिखते हैं। ऐसे में वसंती हवा की इठलाहट को कविवर केदारनाथ अग्रवाल कुछ यूँ अभिव्यक्त करते हैं- **हँसी जोर से मैं/हँसी सब दिशायें/हँसे लहलहाते/हरे खेत सारे/हँसी चमचमाती, भरी धूप प्यारी/बसंती हवा में/हँसी सृष्टि सारी/हवा हूँ हवा में/बसंती हवा हूँ।**

वसंत में सरसों पर आने वाली पीले फूलों से समूची धरती पीली नजर आती है। इसी कारण इस दिन पीले रंग के कपड़े पहनने का चलन है। इन दिनों बोगनवेलिया, टेसू (पलाश), गुलाब, कचनार, कनेर आदि खिलने लगते हैं, आमों में बौर आ जाते हैं, गुलाब और मालती आदि के फूल खिलने लगते हैं। आम-मंजरी और फूलों पर भौंरे मँडराने लगते हैं और कोयल की कुहू-कुहू की आवाज प्राणों को उद्वेलित करने लगती है। तभी तो कविवर नागार्जुन कह उठते है-**रंग-बिरंगी/खिली-अधाखिली/किसिम-किसिम की/गंधों-स्वादों वाली ये, मंजरियाँ/तरूण आम की डाल-डाल/टहनी-टहनी पर/झूम रही हैं।**

इस मौसम में वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ने के बाद उनमें नए-नए गुलाबी रंग के पल्लव मन को मुग्ध करते हैं, सतत् सुन्दर लगने वाली प्रकृति, वसंत ऋतु में सोलह कलाओं से खिल उठती है, जौ-गेहूँ में बालियाँ आने लगती हैं और वन वृक्षों की हरीतिमा मन को अपनी ओर आकर्षित करती है। पक्षियों का

कलरव, पुष्पों पर भौरों का गुंजर तथा कोयल की कुहू-कुहू मिलकर, एक मादकता से युक्त वातावरण निर्मित करते हैं, ऐसे में भला 'निराला' का कवि मन क्यों न बौराये- **लता मुकुल हार गंध भर/बही पवन मंद-मंद मंदतर/जागी नयनों में वन यौवन की माया/सखि वसंत आया।**

यौवन हमारे जीवन का वसंत है, तो वसंत इस सृष्टि का यौवन है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में वसंत का अति सुन्दर व मनोहारी चित्रण किया है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में 'ऋतूनां कुसुमाकरः' कहकर ऋतुराज वसंत को अपनी विभूति माना है। इससे शरद् ऋतु की विदाई के साथ ही पेड़-पौधों और प्राणियों में नवजीवन का संचार होता है। प्रकृति नख से शिख तक सजी नजर आती है और तितलियाँ तथा भँवरें फूलों पर मंडराकर मस्ती का गुंजन गान करते दिखाई देते हैं।

वसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या, पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते है। हर दिन नई उमंग से सूर्योदय होता है और नई चेतना प्रदान कर अगले दिन फिर आने का आश्वासन देकर चला जाता है। साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक जगह लिखा है-"वसंत का मादक काल उस रहस्यमय दिन की स्मृति लेकर आता है, जब महाकाल के अदृश्य इंगित पर सूर्य और धरती एक ही महापिण्ड के दो रूप-उसी प्रकार वियुक्त हुए थे, जिस प्रकार किसी दिन शिव और शक्ति अलग हो जए थे। तबसे यह लीला चल रही है।"

ऐसा माना जाता है कि वसंत पंचमी के दिन ही देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था। इसलिए इस दिन विद्या तथा संगीत की देवी की पूजा की जाती है। पुराणों के अनुसार एक मान्यता यह भी है कि वसंत पंचमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने पहली बार सरस्वती की पूजा की थी और तब से वसंत पंचमी के दिन सरस्वती की पूजा करने का विधान हो गया। छोटे बच्चों को अक्षरारंभ कराने के लिए भी यह अत्यन्त शुभ दिन माना जाता है।

वसंत को ऋतुराज कहा गया है यानी सभी ऋतुओं का राजा, आयुर्वेद में वसंत को स्वास्थ्य के लिए हितकर माना गया है। वसंत में मादकता ओर कामुकता संबंधी कई तरह के शारीरिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वसंत पंचमी का उत्सव मदनोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है और तदनुसार वसंत के सहचर कामदेव तथा रति की भी पूजा होती है। नासिर काजमी ने इसे कुछ यूँ अभिव्यक्त किया है-**कुँज-कुँज नग्नाजन वसंत आ गई, अब सजेगी अंजुमन वसंत आ गई, उड़ रहे हैं शहर में पतंग रंग-रंग, जगमगा उठा गगन वसंत आ गई, मोहने लुभाने वाले प्यारे-प्यारे लोग, देखना चमन-चमन वसंत आ गई, सब्ज खेतियों पे फिर निखार आ गया, ले के जर्द पैरहन वसंत आ गई, पिछले साल के मलाल दिल से मिट गए, लेके फिर नई चुभन वसंत आ गई।**

इस अवसर पर ब्रजभूमि में भगवान श्रीकृष्ण और राधा के आनन्द-विनोद का उत्सव मुख्यरूप से मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण इस उत्सव के अधिदेवता हैं। वसंत पंचमी के दिन से ही होली की शुरुआत हो जाती है और इस दिन पहली बार गुलाल उड़ाई जाती है। इस दिन से होली और धमार के गाने प्रारंभ हो जाते हैं। लोग वासंती वस्त्र धारण कर गायन, वाद्य एवं नृत्य में विभोर हो जाते हैं। ब्रज में तो इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस दिन किसान नए अन्न में घी और गुड़ मिलाकर अग्नि तथा पितृ तर्पण करते हैं। रामचरित मानस के अयोध्याकांड में भी ऋतुराज वसंत की महिमा गाई गई है-**रितु वसंत त्रिबिध बयारी। सब कहं सुलभ पदारथ चारी। स्त्रक चंदन बनितादिक भोग। देखि हरष बिसमय बस लोग॥** अर्थात् वसंत ऋतु में शीतल, मंद, सुगंध तीन प्रकार की हवा बह रही है। सभी को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ हैं। माला, चंदन, स्त्री आदि भोगों को देखकर, सब लोग हर्ष और विस्मय के वश हो रहे हैं।

ऐसा मानते हैं कि वसंत का उत्सव अमर आशावाद का प्रतीक है। वसंत का सच्चा पुजारी जीवन में कभी निराश नहीं होता। पतझड़ में जिस प्रकार वृक्ष के पत्ते गिर जाते हैं, उसी प्रकार वह अपने जीवन में से निराशा और असफलताओं को झटक देता है। निराशा से घिरे हुए जीवन में वसंत आशा का संदेश लेकर आता है और हमें उल्लास से भर देता है।

- निदेशक डाक सेवाएँ, राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर-342001 (राज.) मो. 9413666599

धर्म पर बलिदान होने वाले आर्यवीर हकीकत राय

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

कन्हैया लाल आर्य

हमारे पूर्वजों का स्मरण सदा प्रेरणा का अखण्ड स्रोत रहा है। उनकी जीवनियों का अध्ययन हमारे लिए सदा ही शिक्षाप्रद, मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है। न केवल भारत, अपितु विश्व की समस्त मानव जाति के लिए हमारी यह सांस्कृतिक धरोहर एक आकर्षण का विषय रही है।

मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों में वीर हकीकत राय एक ऐसा बालक था, जिसने धर्म पर अचल रहकर अपनी निडरता, साहसीपन प्रदर्शित करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिखा दिया कि आर्यवीर कभी भी अपने प्राणों का मोह नहीं करता, बल्कि अपने धर्म की रक्षा के लिए प्रसन्नता से अपना जीवन को होम कर दिया करते हैं।

बलिदान ही मनुष्य को महान् बनाता है। जिस देश में वीर हकीकत राय जैसे धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों ने जन्म लिया है, वह देश महान् बन जाता हैं। किसी कवि ने हमारे देश की महानता पर ठीक ही कहा है-

यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गये जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती (अस्तित्व) मिटती नहीं हमारी।

धर्म निष्ठ व्यक्ति अपने शरीर को तो आहुत कर सकता है, परन्तु अपनी आत्मा को लज्जित नहीं किया करता। वह अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहता है। आज तक अनेक धर्मवीरों ने अपने धर्म और मातृभूमि पर अपने प्राणों की आहुति दी है, परन्तु वीर हकीकत राय एक ऐसा बालक था, जिसने बहुत ही अल्प आयु में धर्म की रक्षा करते हुए, अडिग रह कर हंसते-हसंते अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

पश्चिमी पंजाब के प्रसिद्ध नगर सियालकोट की धरती को यह गौरव प्राप्त है कि यहाँ के एक क्षत्रिय कुल में इस वीर बलिदानी ने पिता श्री भागमल एवं माँ श्रीमती कौरां देवी जी के घर जन्म लिया। श्री भागमल जी एक व्यापारी एवं समृद्ध व्यक्ति थे। अतः अपने पुत्र का पालन-पोषण लाड-प्यार से किया। माता-पिता ने अपने पुत्र को दृढ़ धार्मिक संस्कार प्रदान किये। विदेशी प्रभाव के कारण वेद, दर्शन, उपनिषद् का स्वाध्याय छूट चुका था, परन्तु गीता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। यही कारण है कि बलिदान से पूर्व हकीकत राय ने लाहौर के शासक के समक्ष जो कहा है उससे सिद्ध होता है कि वीर हकीकत राय के परिवार में गीता का अध्ययन होता था। मानों वह गीता के इन शब्दों को दुहरा रहा हो-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः॥

यह आत्मा अमर है, इसे शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी इसे गला नहीं सकता, वायु इसे सुखा नहीं सकती। शरीर को केवल नष्ट किया जा सकता है, आत्मा को नहीं। आत्मा तो अमर है। यह शरीर का उसी प्रकार परिवर्तन है, जिस प्रकार मनुष्य अपने पुराने वस्त्र को त्याग कर नया वस्त्र धारण कर लेता है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यानि
संयाति नवानि देही॥

हकीकत राय ने कहा था-"अपने धर्म को त्याग कर पाये जीवन से मृत्यु, सहस्त्रगुणा श्रेष्ठ है। मैं अपने प्राण दे दूंगा, परन्तु अन्याय के सामने नहीं झुकूंगा।"

जब हकीकत राय का जन्म हुआ उस समय देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उस समय की राजभाषा फारसी थी। पिता श्री भागमत जी ने अपने एकमात्र पुत्र हकीकत राय को फारसी सीखने के उद्देश्य से मौलवी के पास मदरसे में भेजा, जिसमें पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे मुसलमान थे। बाल हकीकत राय तीव्र बुद्धि वाला था। उसकी तीव्र बुद्धि और लगन को देखकर मदरसे के अन्य सहपाठी जो मन्दबुद्धि थे, ईर्ष्या करते थे। हकीकत राय की तीव्र बुद्धि उसके लिए विपदा बन गई। हकीकत राय के बलिदान का मुख्य कारण जहाँ मुसलमान की परम्परागत असहिष्णुता तथा धर्मान्धता थी, वहाँ एक कारण हकीकत राय के सहपाठियों का उसके प्रति ईर्ष्या एवं द्वेषभाव भी था।

शीघ्र ही हकीकत राय ने फारसी भाषा पर अच्छा अधिकार कर लिया। मौलवी जी उसकी योग्यता

से इतने प्रभावित थे कि वह यदा-कदा जब भी मदरसे से बाहर जाते, जब हकीकत राय को ही इन बच्चें को सौंप जाते। मौलवी जी की अनुपस्थिति में बच्चे खेलने लग गये। उन मुसलमान बच्चों ने अपनी पढ़ाई में व्यस्त हकीकत राय को भी खेलने के लिए विवश किया, परन्तु हकीकत राय नहीं माना। मौलवी जी का अत्याधिक कृपा पात्र होने के कारण मुसलमान बच्चे पहले से ही चिढ़े हुए थे, परन्तु अब उन्हें तंग करने का एक अवसर और मिल गया। उसी समय हकीकत राय के साथी रशीद ने कहा-''तुमने मौलवी साहब से मेरी चुगली क्यों की? अन्य साथी अनवर ने कहा,-'' मेरे जुआ खेलने की शिकायत तुमने क्यों की? हकीकत राय ने कहा,-''मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।'' इससे वे दोनों और चिढ़ गये और कहने लगे, ''हम चोरी करें या जुआ खेलें, तुम्हारे बाप का क्या जाता है?'' हकीकत राय ने कोई उत्तर नहीं दिया और हकीकत राय को पीटने लगे। इस बीच मौलवी जी वहाँ आ गये। उन्होंने रशीद और अनवर को डांटा और हकीकत राय को भी घर जाने के लिए कह दिया।

उन दिनों हकीकत राय के विवाह की बात चल रही थी। मुसलमानों के दुश्चरित्र के कारण हिन्दू लोगों में बाल विवाह की कुप्रथा चल गई थी। उस समय हकीकत राय की आयु 13 वर्ष थी। इस समय बटाला के श्री किशन सिंह (कुछ लोग श्री चेतराम भी कहते हैं) की सुपुत्री लक्ष्मी का विवाह हकीकत राय के साथ कर दिया।

हकीकत राय जब घर लौटा तो पिता ने उसके फटे कपड़े और शरीर के घावों को देखा और इनका कारण पूछा। हकीकत राय ने सच-सच बता दिया। दूसरे दिन भागमल मदरसे पहुँचे और उन्होंने मौलवी से शिकायत की। मौलवी जी ने रशीद और अनवर को डांटा परन्तु इस डांट-फटकार को विपरीत प्रभाव पड़ा और उन्होंने हकीकत राय से बदला लेने की योजना बना ली। एक दिन मदरसे से वापिस आते समय फिर खेलने के लिए विवश किया परन्तु हकीकत राय ने खेलने से मना कर दिया। बार-बार विवश करने पर हकीकत राय ने कहा-रशीद भाई, माँ भवानी की सौगन्ध। आज मेरा खेलने का मन नहीं है। दूसरा साथी अनवर बोला-अबे भवानी के बच्चे। एक पत्थर के टुकड़े को तू माँ कहता है। मैं तुम्हारी इस पत्थर की देवी को सड़क पर फैंक दूंगा जहाँ रास्ता चलते लोग लातों और पैरों से तुम्हारी माँ भवानी की पूजा करेंगे। शान्त चित्त हकीकत राय बोला-यदि यही बात मैं तुम्हारी पूजा बीबी फातिमा (जो मुहम्मद साहब की पहली पत्नी की कन्या थी) के लिए भी कह दूँ, तो तुम्हें कैसा लगेगा? यह सुनते ही रशीद और अनवर आग बबूला हो गये और मौलवी जी को शिकायत की कि हकीकत राय ने हमारी फातिमा बीबी को गाली दी है। मौलवी ने हकीकत राय को समझाते हुए कहा-''हकीकत राय! क्यों मृत्यु को बुलावा दे रहे हो? इन लोगों से क्षमा मांग लो।'' हकीकत राय ने दृढ़ता से उत्तर दिया, ''मैंने कोई अपराध ही नहीं किया तो क्षमा क्यों मांगू? ''रशीद बोला-''लड़को, इसे बांध कर काजी साहब के पास ले चलो, वही इस काफिर (हिन्दू) को दण्डित करेंगे।''

मुसलमान लड़के हकीकत राय को काजी के पास ले गये। सभी मुसलमान लड़कों ने एक स्वर से हकीकत राय की शिकायत करते हुए कहा-काजी जी, इस काफिर (हिन्दू) ने हमारी रसूलजादी को गाली दी है। बिना किसी जाँच पड़ताल के काजी बौखला गया। काजी बोला-शैतान की औलाद। तेरी यह हिम्मत कि तू रसूलजादी को गाली दे। हमारे एक इशारे पर तुम्हारी गर्दन धड़ से अलग हो सकती है।

हकीकत राय के पिता श्री भागमल जी भी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''काजी साहब। मेरे हकीकत राय ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है। इन लड़कों ने जानबूझकर कर झूठ बोल कर इसे फंसाया है। कृपा करके आप इसे छोड़ दें।'' हकीकत राय पिता के इस प्रकार गिड़गिड़ाने के कारण एक दम बोला, ''पिता जी! आपने बचपन से ही मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया है और आप इनके आगे हाथ जोड़ कर क्यों गिड़गिड़ा रहे हैं। मैंने जब कोई अपराध किया ही नहीं, फिर आप किस बात की क्षमा मांग रहे हैं?''

काजी ने व्यवस्था (फतवा) देते हुए कहा-भागमल जी। इस गुस्ताख लड़के की जान बचाने का एक ही मार्ग है। इसे इस्लाम कबूल करना होगा। हकीकत राय के पिता श्री भागमल ने पुत्र को समझाते हुए कहा, ''बेटा! हां कर दो। इस्लाम स्वीकार करने में क्या

आपत्ति है, कम से कम जान तो बचेगी।'' हकीकत राय शेर की तरह गरज कर बोला, ''पिता जी! मुझे आश्चर्य हो रहा है कि आप मोह, ममता में इतने नीचे उतर सकते हो, मैं कभी भी इस्लाम स्वीकार नहीं करूंगा-मुझे अपना धर्म प्राणों से भी प्रिय है।'' काजी ने बड़े क्रोध से कहा, ''भागमल। मैं तेरे बेटे को मौत की सजा सुनाता हूँ। लाहौर का हाकिम भी मेरे इस निर्णय को बदल नहीं सकता।''

हकीकत राय का पिता श्री भागमत, पत्नी कौरा जी को लेकर लाहौर के लिए प्रस्थान कर गये। हकीकत राय की पत्नी श्रीमती लक्ष्मी जी ने जब अपने पति को रसियों में बंधा देखा तो विचलित हो गई। हकीकत राय ने कहा, ''शायद, हमारी यह अन्तिम मुलाकात होगी, क्योंकि मैं जानता हूं यह धर्मान्ध मुसलमान मेरे साथ न्याय नहीं करेंगे। मैं अपना धर्म त्याग कर प्राण नहीं बचाना चाहता।'' मुकदमा लाहौर के हाकिम के पास पहुँचा। काजी बार-बार हकीकत राय के लिए मृत्यु दण्ड देने का आग्रह कर रहा था। अन्तत: लाहौर के हाकिम को भी मृत्यु दण्ड सुनाना पड़ा। सुनते ही हकीकत राय की माता चीख मारकर हकीकत राय से चिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। हकीकत राय ने माँ को धीरज बंधाते हुए कहा, ''माँ, आपने सदैव मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया है जिसमें लिखा है कि आत्मा अमर है और शरीर नाशवान है। मैं अपने संकल्प पर दृढ़ हूँ। मैं भक्त प्रहलाद तथा सत्यवादी राजा हरीश चन्द्र का वंशज हूँ। मुझे गर्व है कि आज आप का पुत्र धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो रहा है, परन्तु स्मरण रखना कि मेरी मृत्यु के पश्चात् ऐसा तूफान आयेगा कि जिससे इनको अपने झूठे निर्णय पर पश्चाताप होगा।'' लाहौर के हाकिम ने कहा, ''तुम्हारी बकवास बहुत सुन चुके हैं, तुम्हें अन्तिम अवसर दिया जाता है, इस्लाम कबूल कर लो और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।'' हकीकत राय ने उत्तर दिया, ''मैं प्राण दे दूंगा, परन्तु किसी अन्यायी के अन्याय के आगे झुकूंगा नहीं।'' एक कवि ने हकीकत राय के इस उत्तर पर अपनी भावनायें इस प्रकार व्यक्त की हैं-

डराता मौत से है क्या, अमर है आत्मा मेरी।
नहीं कुछ कारगर होने की,
इस पर तेग (तलवार) यह तेरी॥
धर्म पर मर मिटूँगा मैं,
धर्म ही मुझको प्यारा है।
यही हमदर्द है मेरा, यही मेरा सहारा है॥

हकीकत राय की बातें सुनकर लाहौर का हाकिम और वह काजी आग बबूला हो गये और उन्होंने जल्लाद को आदेश देते हुए कहा-ऐ जल्लाद। इस काफिर (हिन्दू) की गर्दन तत्काल धड़ से अलग कर दो, जिससे किसी काफिर को फिर इस्लाम का अपमान करने का साहस न हो। जल्लाद हकीकत राय का हाथ पकड़ कर ले तो गया परन्तु इसकी अल्पायु एवं भोले भाले चेहरे को देखकर उस के हाथ से तलवार गिर पड़ी। हकीकत राय ने तलवार उठाकर जल्लाद को देते हुए, कहा, ''इसमें आप का कोई दोष नहीं, आप अपने कर्तव्य को पूर्ण करो।'' जल्लाद ने आंखे बन्द कर तलवार के एक ही वार से हकीकत राय का सिर धड़ से अलग कर दिया और वह धर्मवीर सदा-सदा के लिए अमर हो गया। वीर हकीकत राय ने देश, धर्म की रक्षा व जातीय स्वाभिमान के लिए अपना बलिदान देकर भारतीय इतिहास को एक नया मोड़ दे दिया। हकीकत राय ने अपने बलिदान द्वारा स्वधर्म-प्रेम का एक अनूठा उदाहरण विश्व के सामने रखा। इतिहास केसरी प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने इस वीर को श्रद्धांजलि देते हुए निम्न पंक्तियों की रचना की-

धन्य-धन्य हो बाल हकीकत राय, धन्य-धन्य बलिदानी।
देगी जन जीवन जन-जन को, तेरी अमर कहानी॥
प्राण लुटायें निर्भय होकर, धर्म प्रेम की ज्वाला फूंकी।
तुझे प्रलोभन देकर हारे, सकल क्रूर मुल्ला अज्ञानी॥
मृत्यु का आलिंगन कीन्हा, जीवन भेद बताया।
मौत से डर कर अन्यायियों की, एक न तूने मानी।
धन्य तुम्हारे माता-पिता और सती लक्ष्मी नारी।
प्राणवीर तुम प्रण के पक्के, धन्य देश अभिमानी॥

आओ इस धर्मवीर को स्मरण करके वीर हकीकत राय के पद चिन्हों पर चलने का व्रत लें। युग को बदलने का संकल्प लें। ए भारत के आर्यवंशीय बच्चों क्या तुम इस प्रकार धर्म से प्यार करोगे? यदि ऐसा हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब पूरे विश्व में **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** का स्वपन साकार होगा।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

- 4/45, शिवाजी नगर, गुरुग्राम 122001
(हरियाणा) चलभाष-0991197073

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री विजय दहिया ग्राम माजरा डबास दिल्ली	11000/-
श्री आनन्द जी चौहान डिफेन्स कॉलोनी, न्यू दिल्ली	10780/-
आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम, हरियाणा	5100/-
श्रीमती निर्मला भटनागर, मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	5000/-
श्रीमती कृष्णा झाम जी हैरीटेज सिटी गुरुग्राम हरियाणा	3000/-
श्री यशपाल आर्य पूर्व निगम पार्षद महावीर पार्क, न. दि.	2100/-
श्री शिवशंकर जी लोहिया अनाजमण्डी, बहादुरगढ़	2100/-
श्री यशदीप प्रेरण ओमैक्स सीटी, बहादुरगढ़	2100/-
श्री जय भगवान जी जून गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	2100/-
श्री सिद्धान्त जी सु. श्री डॉ. राजबीर जी दलाल सै.-6, बहा.	2000/-
श्री महेन्द्र कुमार सु. श्री शंम्भु दयाल अनाजमण्डी बहा.	1500/-
लीखा कैमिकल प्रा. लि. एम.आई.ई. बहादुरगढ़	1200/-
पं. यादराम जी काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्री पंकज जी दहिया सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
पं. भूप सिंह जी परनाला रोड, बहादुरगढ़	1100/-
श्री समुद्र सिंह जी आर्य, खेडला गुज्जर, झज्जर हरि	1100/-
श्री दिव्या देवी सुपुत्री श्री सोमबीर दहिया जी बराही रोड, बहा.	1100/-
श्री विजय सु. श्री हरिशचन्द्र जी सालापुर माजरा सोनीपत	1100/-
कर्नल राजेन्द्र सिंह जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
डॉ. अनिल जी आर्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली	1100/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी शर्मा बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-
मा. प्रभुदयाल जी ठुकराल मनोहर नगर, दिल्ली	600/-
श्री तरूण जी मेहरा सैक्टर-2, बहादुरगढ़	501/-
श्री सुधांशु जी सुपुत्र श्री अंगिरा मुनि आर्य सोलधा, झ.	501/-
श्री सुभाष जी रामनगर परनाला रोड, बहादुरगढ़	501/-
श्रीमती सुनीता देवी पत्नी श्री महाबीर सिंह जी सैक्टर-7	500/-
श्री प्रवीण सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी गढ़ी सांपला रोहतक	500/-
श्री कुलदीप जी राणा फैन्ड्स कॉलोनी लाईनपार, बहा.	500/-
श्री धर्मवीर सिंह जी जून, गुरुनानक कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री दीपेन्द्र डाबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली — 1 टीन सरसों का तेल

श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कलां, दिल्ली — 1 टीन सरसों का तेल

माता भीमेश्वरी देवी मन्दिर आश्रम ट्रस्ट बेरी हरियाणा — 10 टीन घी

श्री वीरेन्द्र थापा लाईनपार, बहादुरगढ़ 10 किलो आटा, 5 किलो दाल

श्री अनिल जी कादयान सैक्टर-6, बहादुरगढ़ — 50 कम्बल

श्रीमती राजवंती देवी पत्नी श्री धर्मपाल जी लाईनपार बहादुरगढ़ — 14 जरसियां

श्री दुर्गा दास जी बंसल, अनाजमण्डी, बहादुरगढ़ — 25 किलो चावल

गौशाला हेतु दान

श्री होशियार सिंह सांगवान देव कॉलोनी रोहतक	3500/-
श्री शशि तुल्ली परिवार द्वारा पश्चिम विहार दिल्ली	2000/-
श्रीमती सुषमा देवी जी लाईनपार शास्त्रीनगर	1102/-
पं. यादराम जी काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेन्द्र कुमार जी विज बंगाली मार्किट, नई दिल्ली	1000/-
श्री समुद्रपाल डबास धर्मविहार बहादुरगढ़	1000/-
श्री रामचन्द्र जी ढक्का, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्रीमती कमला गुप्ता जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री अन्जू जी शर्मा मीरा बाग, पश्चिम विहार दिल्ली	500/-

भोजन मध्य

कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पंवार, वैदिक वृद्धा आश्रम — एक समय का भोजन

श्री प्रोमीला तुली धर्मपत्नी श्री शशी तुली, पश्चिम विहार, दिल्ली — एक समय का भोजन

श्री सुरज आर्य सुपुत्र श्री विजय आर्य घेवरा दिल्ली — एक समय का भोजन

श्री अनिल जी कादयान सैक्टर-6, बहादुरगढ़ — एक समय का भोजन

श्री होशियार जी सांगवान देव कॉलोनी रोहतक — एक समय का भोजन

श्रीमती सुनिता देवी पत्नी श्री महावीर सिंह जी सिंहरोहा बहादुरगढ़ — एक समय का भोजन

श्री दलवीर सिंह जी हुड्डा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ — एक समय का भोजन

श्री जय भगवान जी जून, गुरुनानक कॉलोनी, बहादुरगढ़ — एक समय का भोजन

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जनवरी 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि पथ के आजीवन सदस्यों की सेवा में विनम्र निवेदन

आत्मशुद्धि पथ के समस्त आजीवन सदस्यों की सेवा में नम्र निवेदन है कि आत्मशुद्धि पथ का आजीवन सदस्यता शुल्क 15 वर्षों के लिए होता है। 2002 और 2003 में जो सज्जन सदस्य बने थे उन सभी की सदस्यता समाप्त हो गई है अतः शीघ्र ही 1500/- रूपये सदस्यता शुल्क और पासपोर्ट साईज की फोटो भेजकर पुनः सदस्य बनकर हमारा उत्साह बढ़ाएं और अपना स्वाध्ययशीलता का परिचय देवें। हमने अभी किसी की सदस्यता निरस्त नहीं की है। मार्च अंक तक आपके पास निरन्तर भेजते रहेगें। मार्च तक आपका शुल्क प्राप्त नहीं होता है तो हमें आपकी सदस्यता विवश होकर समाप्त करनी पड़ेगी। शुल्क भेजने के लिए आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ खाता की जानकारी इस प्रकार है- इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, खाता संख्या-20481946471, IFSC Code-A0211948। हमें पत्र द्वारा अथवा ग्राहक संख्या सहित मोबाइल द्वारा शुल्क जमा कराने की तारीख आदि की सूचना अवश्य देने का कष्ट करें जिससे आपके पास रसीद प्रेषित की जा सके। धन्यवाद आपके शुल्क प्राप्ति की प्रतिक्षा में- आचार्य विक्रम देव सहसम्पादक

वार्षिक सदस्य पते के साथ मोहर पर ध्यान दें

वार्षिक सदस्यों से आग्रह है कि पते के साथ आपका शुल्क समाप्ति की मोहर लगा दी जाती है। कई-कई मास मोहर लगाकर हम आपके पास आत्मशुद्धि प्रेषित करते रहते हैं परन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि शुल्क प्राप्त न होने पर बन्द करनी पड़ती है। अतः वार्षिक सदस्य मोहर देखकर तुरन्त शुल्क भेजने का कष्ट करें।

मान्यवर सदस्य गण! आत्मशुद्धि पथ आपका अपना पत्र है जिसके निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों से पुनः पुनः निवेदन है अपना आगामी शुल्क आजीवन 1500/- रूपये, फोटो और वार्षिक सदस्य 150/- रूपये तत्काल भेज देवें। जिससे आपके पास आत्मशुद्धि पथ नियमित रूप से भेजा जाता रहे। आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ खाता की जानकारी इस प्रकार है- इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, खाता संख्या-20481946471, IFSC Code-A0211948। हमें पत्र द्वारा अथवा ग्राहक संख्या सहित मोबाइल द्वारा शुल्क जमा कराने की तारीख आदि की सूचना अवश्य देने का कष्ट करें जिससे आपके पास रसीद प्रेषित की जा सके। धन्यवाद आपके शुल्क प्राप्ति की प्रतिक्षा में- आचार्य विक्रम देव सहसम्पादक

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

जनवरी 2018

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

फर्रूखनगर आश्रम मासिक सत्संग की सुन्दर झलकियां

पं. रमेश चन्द्र वैदिक, अध्यक्ष वैदिक सत्संग मण्डल समिति रजि. झज्जर को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी रामवेश जी द्वारा सम्मानित किया गया।